नालंदा
युनिवर्सिटी

वार्षिक रिपोर्ट 2014-2015

राजगीर ऑफिस

राजगीर, जिला नालंदा, बिहार, भारत, पिन– 803116, फोनः +91–6112–255330, फैक्सः +91–6112–255766
बिहार, भारत

नई दिल्ली ऑफिस

दिल्ली ऑफिसः दूसरी मंजिल, काउंसिल फॉर सोशल डिपार्टमेंट, 53 लोधी एस्टेट, नई दिल्ली, भारत
पिन–110003, फोनः +91–11–24622330, फैक्सः +91–11–24618351

www.nalandauniv.edu.in

नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना 25 नवंबर 2010 को नालंदा यूनिवर्सिटी अधिनियम (2010) के प्रभाव में आने के बाद हुई।

विश्वविद्यालय का प्रशासन शासकीय बोर्ड, कुलाधिपति, उप कुलाधिपति, रजिस्ट्रार, वित्त अधिकारी और अन्य बोर्ड, पैनल, कमिटी व अधिकारियों द्वारा निर्धारित अधिनियम, संविधि और अध्यादेश के जरिए ही किया जाएगा।

नालंदा विश्वविद्यालय भारत के विदेश मंत्रालय के सीमा क्षेत्र के अंतर्गत आता है, जिसका वित्त भारत की केंद्र सरकार द्वारा आयोजित किया जाता है।

विश्वविद्यालय में अतिथि के रूप में भारत के राष्ट्रपति।

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति ही इसके प्रमुख और शासकीय बोर्ड के अध्यक्ष हैं। कुलाधिपति ही शासकीय बोर्ड की मीटिंग और विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता करते हैं।

उप कुलाधिपति विश्वविद्यालय के अकादमिक प्रमुख और कार्यकारी अधिकारी हैं।

अतिथि, भारत के माननीय राष्ट्रपति, श्री प्रणव मुखर्जी

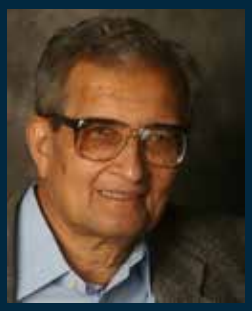

कुलाधिपति, प्रोफेसर अमर्त्य सेन

उप कुलाधिपति, डॉ. गोपा सभरवाल

आमुख

वर्ष 2014–15 नालंदा विश्वविद्यालय के लिए एक ऐतिहासिक साल रहा। यही वो वर्ष था जिसमें विश्वविद्यालय की स्थापना से जारी किए गए काम बहुत सी घबराहट, जिंदादिली के साथ वास्तव में साकार होकर इसे ऐतिहासिक मान्यता दिलवाई।

विश्वविद्यालय के अकादमिक कार्यों का वास्तविक विमोचन विभिन्न मोर्चों पर सितंबर में घंटों, सप्ताहों और महीनों की मेहनत के बाद संपन्न हुआ। विश्वविद्यालय के इस विस्तार में इसके स्टाफ और राजगीर के अंतरिम परिसर ने महत्वपूर्ण योगदान दिया, जो सबके आकर्षण का केंद्र भी बना।

काम के घंटे अक्सर खूब लंबे रहते––कई सारे काम एक साथ चल रहे थे, और इसके लिए टाइम ज़ोन को भी अनदेखा कर दिया गया, क्योंकि विश्वविद्यालय के कई सहयोगी अंतर्राष्ट्रीय सीमा में बैठे हुए भी यहां काम कर रहे थे। कार्य को आगे बढ़ाने के सिलसिले में शासकीय बोर्ड को भी जल्दी–जल्दी मिलना पड़ा। कई स्तरों पर कार्य एक साथ चल रहा था, जहां एक ओर जमीनी स्तर पर संरचना का कार्य चल रहा था, वहीं स्टाफ की नियुक्ति, छात्रों और संकाय की राजगीर में रहने की व्यवस्था भी थी। विश्वविद्यालय समुदाय ने आखिरकार सब समय पर संपन्न कर ही लिया।

बिहार सरकार द्वारा विश्वविद्यालय को उपलब्ध करवाए गए अंतरिम परिसर का नवीनीकरण पहले तो कुछ भागों से शुरू हुआ और फिर पूरे परिसर में हुआ। यहीं से विश्वविद्यालय के सब काम संपन्न हुए। पुनरुद्धार कार्य परिसर की हर संरचना से शुरू होते हुए आवासीय बिल्डिंग, स्कूल ऑफ इकोलोजी एंड एनवायरमेंट की लेबोरेट्री और बाहरी गतिविधियों के लिए तैयार किए लॉन तक पहुंचा।

विश्वविद्यालय का अकादमिक सफर शुरू करने के लिए संकाय की नियुक्ति सबसे अहम् कार्य थी। इसके लिए विश्वविद्यालय ने प्रचार के विविध माध्यमों पर विश्व स्तरीय विज्ञप्ति दी, जिससे ज्यादा से ज्यादा लोगों तक बात पहुंचाकर दुनिया की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को नालंदा के अकादमिक सपने को पूरा करने के लिए आकर्षित किया जा सके। इसका नेतृत्व हमारी डीन (अकादमिक योजना) डॉ. अंजना शर्मा ने खुद किया और मामले से जुड़े हर सवाल पर अपनी जानकारी मुहैया कराई, जिससे यह कार्य सही समय पर पूर्ण हो सका।

डीन शर्मा ने न सिर्फ संकाय की नियुक्ति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, बल्कि ऐसा पाठ्यक्रम तैयार करने में भी अपना सहयोग दिया, जो न सिर्फ संकाय का मार्गदर्शन कर सके बल्कि प्रत्येक स्कूल के उद्देश्यों का प्रतिबिंब भी हो। यह पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ बनाने में भी मददगार हो। इसमें एक बार फिर से काफी समय लगा, और निजी व वर्चुअली कई मीटिंग द्वारा इसमें बहुत से परिवर्तन किए गए।

विमोचन गतिविधियों का मुख्य हिस्सा छात्रों की नियुक्ति भी रहा। इस कार्य को अंतर्राष्ट्रीय कार्यप्रणाली के द्वारा संपन्न किया गया। इसने दाखिला प्रक्रिया को आवश्यक बनाते हुए प्रत्याशियों के मूल्यांकन और उनसे जुड़े दूसरे मसले सुलझाने में सहयोग दिया। विश्वविद्यालय ने चिरस्थायी पद्धति की प्रतिबद्धता के चलते इस प्रक्रिया को पूरी तरह से कागजरहित विधि से संपन्न किया।

दाखिला प्रक्रिया को बहुत ही व्यक्तिगत तरीके से डिजाइन किया गया, जिससे प्रत्येक प्रत्याशी का मूल्यांकन विविध स्तरों पर निजी रूप से किया जा सका। उनके चयन का मापदंड सिर्फ उनकी स्नातक की डिग्री में प्राप्त अंक ही नहीं थे।

एक इंटरैक्टिव एडमिशन पोर्टल का लॉन्च किया गया, जिससे भावी छात्रों से संबंधित सारी अपेक्षाओं को मुहैया कराया जा सके, उनके सवालों का जवाब भी तुरंत और संतुष्ट तरीके से दिया गया। यह पूर्वनिर्धारित था कि ''शुरुआती'' समूह को छोटा ही रखा जाए, जिससे उनकी जरूरतों के सभी पहलुओं पर संकाय द्वारा ठीक तरीके से ध्यान दिया जा सके। प्रत्येक छात्र का साक्षात्कार कमेटी ने डीन शर्मा के नेतृत्व में लिया और इस तरह से नालंदा को अपना पहला छात्र समूह मिला।

चूंकि छात्र ही प्रत्येक विश्वविद्यालय का केंद्र होते हैं, तो उनकी सुख–सुविधाओं का ध्यान रखने के लिए बहुत सी तैयारी की गई, जिसके तहत रेजिडेंस हॉल का नवीनीकरण रहा, जहां छात्र अपना ज्यादा समय बिताने वाले थे। छात्र आवासीय हॉल को बिहार सरकार द्वारा उपलब्ध कराए गए उनके श्रेष्ठ होटल में स्थापति किया गया। तथागत होटल नाम का यह होटल बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम द्वारा चलाया जाता था। कुछ नवीनीकरण और पुनरुद्धार द्वारा इसे तथागत रेसीडेंस हॉल में परिवर्तित किया गया, जो न सिर्फ वहां आए छात्रों का घर बनने वाला था, बल्कि संकाय और स्टाफ के कुछ वरिष्ठ सदस्य भी वहीं रहने वाले थे।

लॉन्च की तारीख नजदीक आने के साथ विश्वविद्यालय में उत्साह चरम पर था, जिसे ''नए नालंदा विश्वविद्यालय'' का लॉन्च समारोह कवर करने पहुंचे स्थानीय और राष्ट्रीय मीडिया ने और बढ़ा दिया। सितंबर 2014 में नालंदा सिर्फ इस परियोजना से जुड़े नजदीकी लोगों तक ही सीमित नहीं रह गया, बल्कि अब यह वैश्विक स्तर पर छा गया था। एक विश्वविद्यालय को बनाने के लिए जरूरी सभी तत्व––प्रशासन, संकाय और छात्र अब मीडिया के आकर्षण का केंद्र थे। मीडिया द्वारा उनके अनेकों साक्षात्कार लिए गए ये जानने के लिए कि किस चीज ने उन्हें नालंदा विश्वविद्यालय के प्रति आकर्षित किया।

विश्वविद्यालय समुदाय अब उल्लेखनीय रूप से प्रत्यक्ष था और परियोजना के शुरुआती साल में गठित हुए छोटी सी टीम से बढ़कर अब अच्छा खासा निकाय बन गया था।

विश्वविद्यालय ने अब अपना अकादमिक कैलेंडर तैयार कर लिया है, जिसके अनुसार सारी गतिविधियां निर्धारित कर ली गईं। कैलेंडर में दर्ज पहली गतिविधि आने वाली क्लासों के लिए ओरिएंटेशन प्रोग्राम है। सप्ताह भर चलने वाले ओरिएंटेशन प्रोग्राम में विश्वविद्यालय और स्कूल स्तर की गतिविधियां होंगी, जो विश्वविद्यालय परिसर के अंदर और बाहर संपन्न होंगी। ओरिएंटेशन के बाद औपचारिक रूप से कक्षाएं और अकादमिक गतिविधि शुरू हो जाएगी।

पहले सत्र की कक्षाएं राजगीर इंटरनेशनल कंवेंशन सेंटर (आरआईसीसी) में शुरू की जाएंगी, इसका बंदोबस्त भी विश्वविद्यालय को बिहार सरकार द्वारा कराया गया। इसी के साथ विश्वविद्यालय के अंतरिम परिसर में एक लाइब्रेरी भी तैयार की गई है, जहां छात्र अपने खाली समय में पढ़ सकते हैं।

नालंदा विश्वविद्यालय की नई शुरुआत की मुख्य बात यकीनन 19 सितंबर 2014 को इंटरनेशनल कंवेंशनल सेंटर में विदेश मंत्री सुषमा स्वराज द्वारा किया गया विश्वविद्यालय का औपचारिक उद्घाटन रहा। यह बहुत बड़ा समारोह रहा, जिसमें विश्वविद्यालय ने बिहार के मुख्यमंत्री, अनेक राजनयिकों व सम्मानीय व्यक्तियों की मेजबानी की। विदेश मंत्री ने समारोह के अवसर पर दिए गए अपने भाषण में कहा, ''यह कहना गलत होगा कि आज हम 427 ईसवीं में बने नालंदा विश्वविद्यालय को पुनर्जीवित कर रहे हैं क्योंकि परंपराएं कभी मरा नहीं करतीं... नालंदा महज एक विश्वविद्यालय नहीं है, बल्कि यह एक परंपरा है। नालंदा विश्वविद्यालय अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच एक कड़ी है।'' विश्वविद्यालय के लिए यह बहुत सम्मान और प्रेरणा की बात रही।

परिसरीय गतिविधियां बढ़ने से विश्वविद्यालय एक नई उमंग से विश्वविद्यालय के दूसरे पहलुओं पर काम करने में जुट गया। विश्वविद्यालय ने मास्टर प्लान के चयन और परिसर में फेज–1 का काम शुरू करने के लिए वास्तुकार के साथ करार पर हस्ताक्षर किए। इसके चलते वास्तुकार टीम और विश्वविद्यालय टीम ने

अहमदाबाद और राजगीर में कई महत्वपूर्ण मीटिंग कीं। मास्टर–प्लान को जमीनी रूप पर आयोजित किया गया, जिससे सभी को प्रारूप देखने में समर्थ हो पाएं।

वार्षिक रिपोर्ट में इन सभी समारोह के साथ परिसर जीवन की कुछ और झलकियां भी दर्ज की गई हैं। छात्रों की उपस्थिति ने जहां परिसर को जीवंत कर दिया, वहीं बहुत से प्रमुख अतिथियों का भी आना–जाना लगा रहा। उत्सव मनाना, खेल और दूसरी गतिविधियां भी परिसरीय जीवन का अहम् हिस्सा रहीं।

डॉ. गोपा सभरवाल

उपकुलाधिपति, नालंदा विश्वविद्यालय

अनुक्रम

आमुख **ii**

सपना साकार करने की तैयारी **1**

2014–15 के दौरान नालंदा विश्वविद्यालय के शासकीय बोर्ड की तीन मीटिंग हुईं 3

छात्रों और संकाय के लिए आधारभूत सुविधाओं का निर्धारण 5

नालंदा विश्वविद्यालय लाईब्रेरी (एनयूएल) का शुभारंभ 7

अकादमिक संरचना का अंतिम रूप 9

विश्वविद्यालय दाखिलों की शुरुआत 12

नई शुरुआत **13**

शुरुआती बैच का ओरिएंटेशन 16

विदेश मंत्री सुषमा स्वराज द्वारा औपचारिक उद्घाटन 17

अकादमिक गतिविधियां **19**

व्याख्यान और वार्ताएं 21

अध्ययन यात्राएं 25

परिसर में जीवन **27**

विश्वविद्यालय समुदाय के साथ समय बिताते कुलाधिपति 29

राजगीर महोत्सव में विश्वविद्यालय समुदाय की भागीदारी 30

राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर एसडीएम राजगीर से मिलते छात्र 30

नालंदा विश्वविद्यालय में पारंपरिक समारोह 31

25 नवंबर 2014 को तथागत रेजिडेंस हॉल में स्थापना दिवस समारोह 31

राजगीर अंतरिम परिसर में गणतंत्र दिवस समारोह 33

नालंदा विश्वविद्यालय में खेल गतिविधियां 33

2014–15 में नालंदा विश्वविद्यालय परिसर में आने वाले खास मेहमान 34

परिसरिय निर्माण **37**

परिसर डिजाइन के लिए विश्वविद्यालय ने वास्तु शिल्प सलाहकार के साथ करार पर हस्ताक्षर किए 39

पहले दौर का वास्तुशिल्प डिजाइन तैयार 41

वित्त प्रबंधन **43**

नालंदा टीम **45**

शासकीय बोर्ड के सदस्य 45

समितियां 49

नालंदा विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य 50

मुख्य अधिकारी और प्रशासनिक स्टाफ 59

सपना साकार करने की तैयारी

वर्ष 2014–15 भारत में उच्च अध्ययन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। यह वही साल था जब नालंदा के प्राचीन विश्वविद्यालय ने नये अवतार में कक्षाओं की शुरुआत की। नालंदा में साल भर चलने वाले अकादमिक कार्यक्रमों और गतिविधियों की उत्साहित जमीन को तैयार करने के लिए दिन रात काम किया गया। इन गतिविधियों का एक ही मकसद था कि अगस्त 2014 तक स्नातकों के नए और पहले बैच के स्वागत की तैयारी पूरी कर ली जाए। ये छात्र विश्वविद्यालय के पहले दो स्कूलों—*स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज और स्कूल ऑफ इकोलोजी एंड एनवायरमेंट स्टडीज में दाखिला लेकर आ रहे थे।*

विश्वविद्यालय में हर कोई प्रत्येक स्तर पर उन सभी उपकरणों को जुटाने में व्यस्त था जो एक अकादमिक ऑपरेशन में लॉन्च के समय काम आ सकते थे।

विश्वविद्यालय का शासकीय बोर्ड निर्देश देने और विकास की जानकारी लेने में जी जान से जुटा था। भले ही शासकीय बोर्ड के सदस्य तैयारियों के समय खुद वहां मौजूद नहीं थे, लेकिन वे वर्चुअल संसाधनों के माध्यम से पूरे समय विश्वविद्यालय के अधिकारियों के लगातार संपर्क में रहकर पूरा सहयोग प्रदान कर रहे थे। उन्होंने तैयारियों के मार्गदर्शन के चलते जब भी जरूरत हो मीटिंग कर वहां पहुंचने का निर्णय भी लिया था।

जमीनी स्तर पर उपकुलाधिपति, डॉ. गोपा सभरवाल और डीन (अकादमिक योजना) डॉ. अंजना शर्मा विश्वविद्यालय अधिकारियों का मार्गदर्शन कर उन्हें राजगीर के काम संभालने में सहयोग दे रही थीं।

किसी भी नए विश्वविद्यालय की तैयारियों में ये तीन स्तर बहुत जटिल होते हैंः आधारभूत संरचना तैयार करवाना, मूलभूत अकादमी को आकार देना और दाखिला प्रक्रिया का विमोचन।

छात्रों के आने वाले समूह के लिए आधारभूत संरचना को समय सीमा के भीतर तैयार करवाना विश्वविद्यालय की सबसे बड़ी चुनौती थी, जिसमें बिहार सरकार ने बहुत सहयोग दिया। उन्होंने अंतरिम परिसर की स्थापना के लिए न सिर्फ जगह उपलब्ध करवाई बल्कि एक प्रमुख होटल——तथागत को भी लीज पर दिलवाने में मुख्य भूमिका निभाई। तथागत होटल को छात्रों के रेजिडेंस हॉल के रूप में उपयोग किया गया।

विश्वविद्यालय का आकदमिक स्वरूप संकाय की नियुक्ति और पाठ्यक्रम के निर्धारण के साथ पूरा हुआ, जिसके तहत नालंदा के मकसद को सर्वोपरि रखा गया। इसका नेतृत्व डीन शर्मा ने किया। इसके लिए पाठ्यक्रम कार्यशाला का आयोजन भी किया गया, जिससे दोनों स्कूलों के विचारों पर गहन चर्चा के जरिए सही पाठ्यक्रम का निर्धारण हो सके।

छात्र चयन भी लॉन्च की इस प्रक्रिया का जटिल भाग रहा, इसके लिए अपनाई गई अंतर्राष्ट्रीय पद्धति को अध्ययन कर लागू करने में खासा समय लगा, जिससे नालंदा के लिए सही छात्रों का चुनाव किया जा सके। इस तरह हमने न सिर्फ चयन में व्यक्तिगत और विशिष्ठ पद्धति का चुनाव किया, बल्कि दाखिला प्रक्रिया को ऑनलाइन कर इसे कागजमुक्त भी बनाया, जो हमारे संवहनीयता के मिशन की पुष्टि करता है।

विश्वविद्यालय की योजना वर्ष 2020 तक निम्न विषयों में स्नातकोत्तर और डॉक्टोरेट पाठ्यक्रम विमोचन करने की है:

- ऐतिहासिक अध्ययन
- पारिस्थितिक व पर्यावरण अध्ययन
- बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म
- भाषा संबंधी और साहित्य
- अंतर्राष्ट्रीय संबंध और शांति अध्ययन
- सूचना विज्ञान और तकनीक
- अर्थशास्त्र और प्रबंधन

2014–15 के दौरान नालंदा विश्वविद्यालय के शासकीय बोर्ड की तीन मीटिंग हुई

जैसा कि पहले भी बताया गया, महीनों और सालों की मेहनत के बाद जैसे–जैसे लॉन्च का समय करीब आने लगा तो विश्वविद्यालय का शासकीय बोर्ड और जल्दी मीटिंग करने लगा। यद्यपि वैसे भी सब प्रत्येक गतिविधि से जुड़े हुए ही थे, लेकिन मीटिंग के जरिए बोर्ड संयुक्त निर्णय ले पाने और विकास को जमीनी स्तर पर परखने में सफल रहा। विश्वविद्यालय के लॉन्च से जुड़े मसलों पर भी उन्होंने कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

शासकीय बोर्ड की मीटिंग

आठवीं मीटिंगः 2 मई 2014, नई दिल्ली

नौंवी मीटिंगः 19 जुलाई 2014, नई दिल्ली

दसवीं मीटिंगः 13–14 जनवरी 2015, राजगीर

अप्रैल 2014 से मई 2014 तक भारत में 16वीं लोकसभा के लिए चुनाव करवाये गए, जिसके फलस्वरूप एक नई सरकार का गठन हुआ।

जब जुलाई में शासकीय बोर्ड मिलने के लिए जुटा, तो उन्होंने नई विदेश मंत्री, सुषमा स्वराज और वित्त मंत्री अरुण जेटली को भी आमंत्रित किया। शासकीय बोर्ड ने दोनों मंत्रियों को परियोजना के बारे में बताया और विश्वविद्यालय को केंद्र सरकार द्वारा मिलने वाली मदद जारी रखने पर आभार भी व्यक्त किया।

शासकीय बोर्ड की मीटिंग, 19 जुलाई 2014

शासकीय बोर्ड की मीटिंग में वीडियो कॉल के जरिए शामिल होते सदस्य, 2 मई 2014

विदेश मंत्री, सुषमा स्वराज के साथ शासकीय बोर्ड

छात्रों और संकाय के लिए आधारभूत सुविधाओं का निर्धारण

विश्वविद्यालय के स्थायी परिसर का निर्माण बिहार सरकार द्वारा उपलब्ध करवाए गए 455 एकड़ के क्षेत्र पर किया जाएगा। इस पर नेट जीरो बिल्डिंग बनाने की योजना है, जो कैंपस के समवहनीयता के मकसद को पूरा करती है। हालांकि इसमें अभी भी कुछ समय लगेगा, तो जब तक परिसर पूरा तैयार होगा, तो विश्वविद्यालय का कार्य राजगीर के अंतरिम परिसर से शुरू कराया गया। यह परिसर भी विश्वविद्यालय को बिहार सरकार ने ही उपलब्ध कराया।

अंतरिम परिसर के नवीनीकरण में उल्लेखनीय प्रयास कर उसे रहने योग्य बनाया गया। उस साल चुनाव होने और चुनाव आचार संहिता के चलते नवीनीकरण का काम भी धीमा पड़ गया। एक समय तो ऐसा लगने लगा था कि परिसर समय पर पूरा नहीं हो पाएगा। लेकिन निराश न होकर विश्वविद्यालय की टीम ने अपना मनोबल ऊंचा रखते हुए सभी कार्यों को पूरा कर आखिरकार अगस्त 2015 तक काम संपन्न करा ही लिया।

शासकीय बोर्ड की मीटिंग, 19 जुलाई 2014

शासकीय बोर्ड की मीटिंग के बाद श्री अरूण जेटली जी के साथ शासकीय बोर्ड के सदस्य, 19 जुलाई 2014

अंतरिम परिसर के नवीनीकरण में बिहार सरकार ने बहुत सहयोग किया, इसी के साथ उन्होंने विश्वविद्यालय के अंतरिम परिसर के नवीनीकरण का काम देखने के लिए एग्जीक्यूटिव एजेंसी के तौर पर बिहार राज्य पुल निर्माण निगम लिमिटेड (बीआरपीएनएन) को भी नियुक्त किया। बिहार सरकार ने अतिरिक्त इमारत के तौर पर, तथागत होटल को भी छात्रों का अस्थायी रेजिडेंस हॉल बनाने के लिए उपलब्ध करवाया।

अंतरिम परिसर का नवीनीकरण

बिहार सरकार ने नालंदा विश्वविद्यालय को उसके स्थायी परिसर के निर्माण से पहले जो 4.5 एकड़ का अंतरिम परिसर मुहैया कराया, वह स्वास्थ्य विभाग के अधिकार में था, और इससे पहले वहां सब–डिविजनल ऑफिस राजगीर का परिसर था।

परिसर को विश्वविद्यालय को सौंपे जाने पर इसकी मरम्मत और नवीनीकरण की बहुत जरूरत थी। विश्वविद्यालय ने इस परिसर का इस्तेमाल सिर्फ क्लासरूम बनाने के लिए ही नहीं बल्कि संकाय और उपकुलाधिपति के अस्थायी निवास के तौर पर भी करने का निर्णय लिया, जब तक कि स्थायी परिसर तैयार न हो जाए। इससे अंतरिम परिसर के ढांचे में कुछ चीजें बढ़ानी भी पड़ीं। बीआरपीएनएन ने विश्वविद्यालय के अधिकारियों के साथ मिलकर डिजाइन फाइनल करते हुए जहां विश्वविद्यालय की जरूरतों का ध्यान रखा, वहीं बिहार सरकार द्वारा निर्धारित नियमों का भी पालन किया।

यद्यपि आम चुनावों के चलते कार्य की गति धीमी पड़ गई थी, लेकिन बाद में इसकी गति बढ़ाते हुए इसे समय पर पूरा कर लिया गया। राजगीर इंटरनेशनल कंवेंशन सेंटर (आरआईसीसी) की सुविधाओं को विश्वविद्यालय ने पहले सत्र की क्लासें शुरू करने के लिए इस्तेमाल किया। आरआईसीसी में विश्व–स्तरीय सुविधाओं वाले सेमिनार रूम और कॉफ्रेंस हॉल मौजूद हैं, जो कभी भी विश्वविद्यालय के इस्तेमाल के लिए खुले हैं।

छात्रों के लिए आवसीय परिसर बनाने हेतु तथागत होटल को पट्टे पर लिया गया

अंतरिम परिसर में छात्रों की रिहायश के लिए जगह की कमी के चलते विश्वविद्यालय ने राजगीर के आसपास उपयुक्त जगह तलाशने में खासी मेहनत की। हालांकि एक उपयुक्त जगह जो सारी जरूरतों को पूरा करने के साथ ही सुरक्षित और आसानी से आ–जा सकने योग्य हो, उसे बिहार सरकार की मदद के बिना नहीं ढूंढ़ा जा सकता था। इसी के चलते बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम (बीएसटीडीएस) द्वारा संचालित तथागत होटल को बिहार सरकार ने छात्रों के आवासीय परिसर हेतु तीन साल के लिए पट्टे पर दिलवाया।

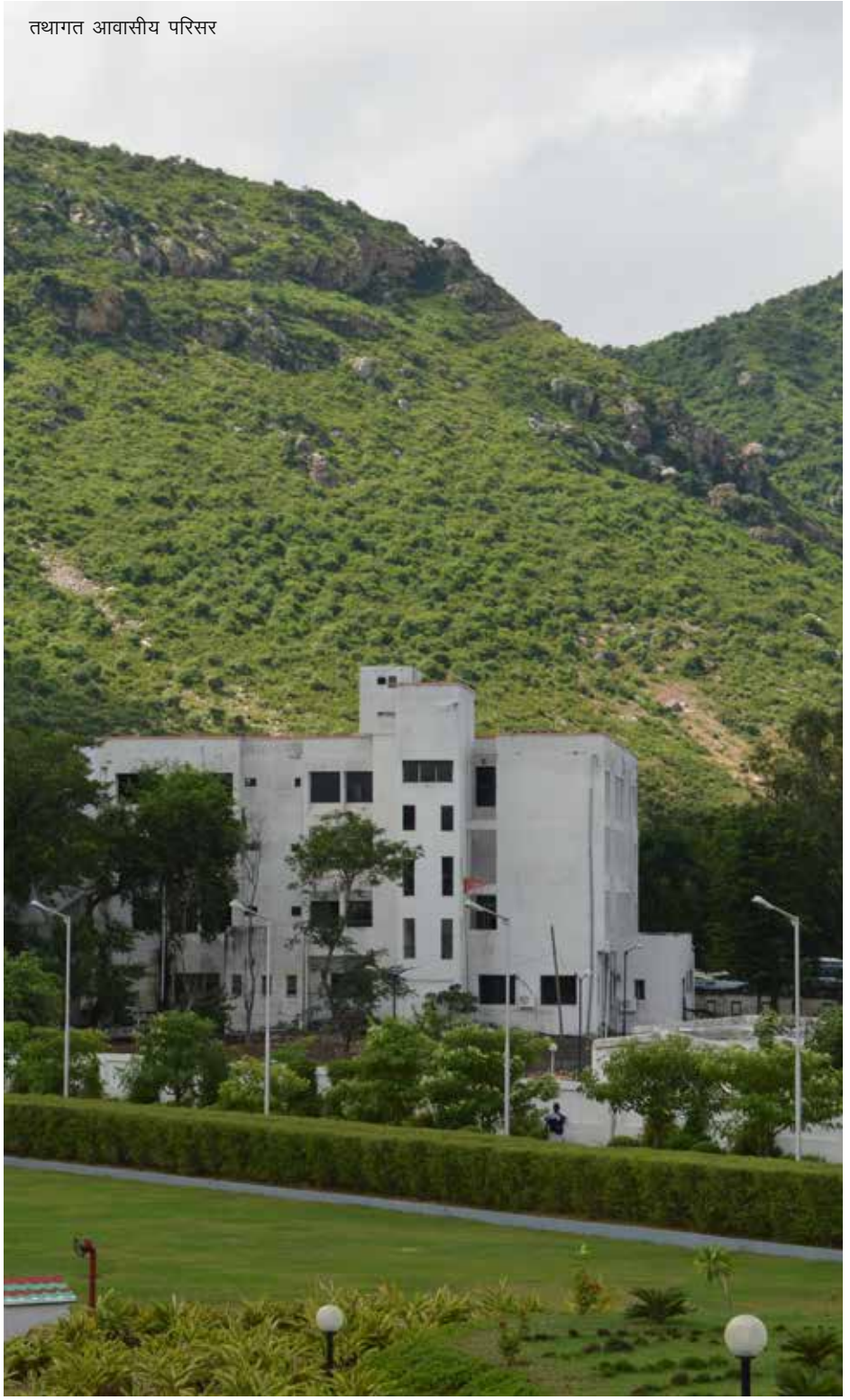
तथागत आवासीय परिसर

सामरिक दृष्टि से सही जगह पर स्थित यह संपत्ति ठीक राजगीर इंटरनेशनल कंवेंशन सेंटर (आरआईसीसी) के सामने है। तथागत शहर के केंद्र से महज कुछ मिनटों की दूरी पर बहुत ही शांत और खूबसूरत माहौल में बना है। होटल से राजगीर के खूबसूरत पहाड़ नजर आते हैं, जहां सर्दियों का कोहरा उतरता है, तो गर्मी में इनकी हरियाली मन को शांति पहुंचाती है। इसमें चारों ओर पसरा हुआ मैदान, 44 कमरे, एक कॉन्फ्रेंस हॉल, डायनिंग हॉल और एक रसोई है। बीएसटीडीसी ने पट्टे के करार के तहत होटल के 11 कर्मचारी भी विश्वविद्यालय को उपलब्ध करवाए हैं, जिनमें छह सफाई कर्मचारी, दो माली, एक विद्युतकर्मी, एक लिफ्टमैन और एक सुपरवाइजर शामिल हैं।

हालांकि, अंतरिम परिसर की ही तरह इस संपत्ति को भी मरम्मत की जरूरत थी, लेकिन उस स्तर की नहीं। छात्रों के आवास को पहले बैच के आने से पूर्व सही हालत में करने के लिए विश्वविद्यालय ने भोजन कक्ष का नवीनीकरण करवाया। विश्वविद्यालय ने भोजनालय में काम करने के लिए कर्मियों को नियुक्त किया, जिसका इंतजाम भोजनालय प्रबंधन समिति ने देखा। भोजन कक्ष और भोजनालय की सुविधाएं छात्रों, संकाय और स्टाफ के लिए शुरू कर दी गईं।

होटल के परिसर में एक बेडमिंटन और वॉलीबॉल कोर्ट भी बनाया गया और छात्रों के आराम व मनोरंजन को ध्यान में रखते हुए एक टीवी लाउंज का भी बंदोबस्त किया गया।

चूंकि अंतरिम परिसर के निर्माण कार्य में अभी और समय लगने वाला था, तो तथागत रेजिडेंस हॉल छात्रों के साथ–साथ संकाय और वरिष्ठ स्टाफ के कुछ सदस्यों का भी आश्रय बना। इससे उनकी आपसी समझ को बढ़ाने का मौका भी मिला, और विश्वविद्यालय के मकसद को पूरा करने की नींव पड़ी।

नालंदा विश्वविद्यालय लाइब्रेरी (एनयूएल) का शुभारंभ

नालंदा विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी विश्वविद्यालय के मास्टर प्लान के बिल्कुल उपयुक्त है, डिजाइन के स्तर पर भी और मकसद के स्तर पर भी। एनयू लाइब्रेरी का मुख्य उद्देश्य जहां लाइब्रेरी को संसाधनों का केंद्र बनाना था, वहीं प्रिंट और डिजिटल दोनों तरह की किताबों में अत्याधुनिक सेवा मुहैया कराना भी था।

समस्त विश्वविद्यालय समुदाय के लिए लाइब्रेरी अकादमिक सफर की खास मित्र बनती है। ज्ञान के लिए नई किताबों की तलाश में ये हमारी बड़ी मदद करती है।

नालंदा विश्वविद्यालय लाइब्रेरी जहां अच्छी सर्विस के लिए प्रतिबद्ध है, वहीं विश्वविद्यालय समुदाय की बौद्धिक उत्सुकता को भी पुष्ट करती है। इसका मकसद किताबों तक बाधा रहित पहुंच बनाना और समस्त परिसर को अनुशासनात्मक रूप से एक–दूसरे से जोड़ना है।

इसे एक बौद्धिक केंद्र बनाने का भी प्रस्ताव है, जहां छात्रों और शिक्षकों के लिए गुणवत्तापूर्ण संसाधन आसानी से उपलब्ध हों।

इस वर्ष, लाइब्रेरी ने किताबों, ई–बुक्स, ई–जरनल्स और ऑनलाइन डाटाबेस से संबंधित प्रोग्राम का लॉन्च किया। एनयू लाइब्रेरी में 4350 से ज्यादा किताबें संग्रहित हैं, और बहुत से व्यक्तिगत दाताओं ने भी इसे अपनी किताबें दी हैं।

किताबों का उपहार

विश्वविद्यालय ने मध्य चीनी और कोरियाई इतिहास पर आधारित किताबों का बड़ा संग्रह अक्टूबर 2012 में ऑस्ट्रेलियाई नेशनल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर स्वर्गीय केन गार्डिनर से प्राप्त किया था।

इस साल इसे इंटरनेशनल मोनेटरी फंड (आईएमएफ), वाशिंगटन डीसी से किताबें उपहारस्वरूप प्राप्त की। कुलाधिपति प्रोफेसर अमर्त्य सेन और आईएमएफ के निदेशक मैडम क्रीस्टीन लगार्डे की आपसी चर्चा के बाद यह संभव हो पाया।

प्रोफेसर वांग गुंग वू ने भी विश्वविद्यालय को किताबें दान करने का प्रस्ताव दिया। प्रोफेसर विश्वविद्यालय के शासकीय बोर्ड के सदस्य भी हैं।

भारत में पहली सोलर फर्म डालने वालों में से एक जगदीश चंद्र कपूर ने विश्वविद्यालय को पर्यावरण इंजीनियरिंग से संबंधित किताबें उपहार में दीं।

ई–बुक्स

वर्ष खत्म होते–होते विश्वविद्यालय के पास 170 से ज्यादा ई–बुक्स, 4800 ई–जरनल्स और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, एल्जेवियर'स साइंस डायरेक्ट इत्यादि से संबंधित ऑनलाइन डाटाबेस मोजूद था।

डवलपिंग लाइब्रेरी नेटवर्क (डीईएलएनईटी) इंटर–लाइब्रेरी लोन/संसाधन साझा करना

लाइब्रेरी ने अपने यूजर्स के लिए इंटर–लाइब्रेरी लोन सर्विस भी शुरू की, ताकि जो किताबें और पत्र–पत्रिका लाइब्रेरी में मौजूद नहीं हों, उन्हें खरीदा जा सके। लाइब्रेरी ने खुद को डवलपिंग लाइब्रेरी नेटवर्क (डीईएलएनईटी) के तहत भी रजिस्टर कराया, जिससे वो नेटवर्क में मौजूद लाइब्रेरियों से संसाधन साझा कर सके। यह अपने यूजर्स को कंप्यूटरीकृत सर्विस देने के अतिरिक्त डाटा को संग्रहित, सुरक्षित और जरूरत पड़ने पर डुप्लीकेशन को हटाने का भी काम करता है।

सेंटर ऑफ रिसर्च लाइब्रेरी (सीआरएल) इंटर–लाइब्रेरी लोन/संसाधन साझा करना

शिकागो स्थित सेंटर ऑफ रिसर्च लाइब्रेरी (सीआरएल) विश्वविद्यालय, कॉलेज और स्वतंत्र शोध लाइब्रेरियों का एक अंतर्राष्ट्रीय संघ है। सीआरएल आधुनिक शोध और मानविकी, विज्ञान व समाज विज्ञान में अध्ययन में मदद करता है। यह शोधार्थियों को जरूरी डाटा उपलब्ध कराता है। सीआरएल अखबारों, जरनल, कागजातों, आर्काइव और दूसरे पारंपरिक व डिजिटल संसाधनों को प्राप्त कर संरक्षित रखता है।

नालंदा विश्वविद्यालय ने भी खुद को सीआरएल का सदस्य रजिस्टर करवा लिया है, जिसके जरिये अब यह उनके 50 लाख से ज्यादा डाटा सामग्रियों का उपयोग कर सकता है। नालंदा विश्वविद्यालय सीआरएल में रजिस्टर होने वाला एकमात्र भारतीय विश्वविद्यालय है।

इंफॉर्मेशन एंड लाइब्रेरी नेटवर्क सेंटर (आईएनएफएलआईबीएनईटी)

गांधीनगर स्थित आईएनएफएलआईबीएनईटी भारत के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) का स्वायत्त इंटर–यूनिवर्सिटी सेंटर है। यूजीसी–इंफोनेंट डिजिटल लाइब्रेरी संघ अपने सदस्य संस्थानों के लिए बड़े पैमाने पर संसाधनों को सब्सक्राइब करता है। सब्सक्राइब किए हुए सभी इलेक्ट्रॉनिक संसाधन इसके प्रकाशक की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। उनकी पहुंच में ई–संसाधन, संदर्भग्रंथ सूची डाटाबेस और दूसरे संसाधन हैं। विश्वविद्यालय ने पहले ही आईएनएफएलआईबीएनईटी के साथ मेंबरशिप रजिस्ट्रेशन की शुरुआत कर दी थी।

लाइब्रेरी स्वचालन

लाइब्रेरी सिस्टम के सब–सिस्टम को स्वचालित (पहुंच, कैटलॉग और किताबों के वितरण को प्रबंधित) करने के लिए एनयू लाइब्रेरी ने लाइब्रेरी ऑटोमेशन सॉफ्टवेयर, कोहा (केओएचए) को लागू किया। कोहा न्यूजीलैंड का शब्द है, जिसका मतलब है उपहार या दान। कोहा एक ओपन–सोर्स इंटीग्रेटेड लाइब्रेरी सिस्टम (आईएलएस) है। यह वेब आधारित बहुभाषी इंटीग्रेटेड लाइब्रेरी सिस्टम है, जो विश्व भर की बड़ी लाइब्रेरियों के स्वचालन की प्रक्रिया को नियंत्रित करता है। कोहा लाइब्रेरी प्रबंध की सभी जरूरतों को पूरा करता है।

ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटेलॉग (ओपीएसी)

ओपीएसी को लाइब्रेरी डाटा सर्च के लिए यूजर्स ने ही सुझाया था। ओपीएसी एक शक्तिशाली वेब आधारित सर्च इंजन है, जिससे कोहा संदभग्रंथ डाटाबेस ऑनलाइन से संबंधित कुछ भी सामग्री सर्च की जा सकती है।

निम्न सेवाएं भी लाइब्रेरी के लिए उपलब्ध कराई गई हैं:

- सिलेक्टिव डिसेमिनेशन ऑफ इंफॉर्मेशन (एसडीआई)
- करंट अवेयरनेस सर्विस (सीएएस)
- रेफ्रेंस एंड इंफॉर्मेशन सर्विस
- इंफॉर्मेशन लिटरेसी
- ऑरिएंटेशन प्रोग्राम फॉर यूजर्स
- रेप्रोग्राफिक सर्विस

लाइब्रेरी

अकादमिक संरचना का अंतिम रूप

प्राचीन नालंदा अपने विशिष्ठ गुरुओं के लिए जाना जाता रहा और नए नालंदा विश्वविद्यालय के लिए जहां अकादमिक रूप से नए पैमानों की कल्पना की जा रही थी, वहीं इसकी प्राचीन विशिष्टता हर चर्चा का केंद्र रहा। विश्वविद्यालय का उद्देश्य भी यही है: ''सबसे ऊपर, नालंदा ज्ञान को केंद्र होना चाहिए और सबसे खास। इसका पहला काम यकीनन दुनिया की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को यहां लाकर इसके पुराने आदर्शों की स्थापना ही होना चाहिए, जिसकी अब तक अनदेखी की जाती रही है।

संकाय की नियुक्ति डीन (अकादमिक योजना) अंजना शर्मा के नेतृत्व में विश्वविद्यालय के उद्देश्यों, योजना को ध्यान में रखते हुए कई मीटिंग के जरिए की गई। इसमें देश–विदेश के लोगों को आमंत्रित किया गया।

दोनों शुरुआती स्कूलों के लिए पाठ्यक्रम डिजाइन और विकास का काम तो बहुत पहले तभी से शुरू हो गया था, जब इन दोनों स्कूलों को विश्वविद्यालय के पहले स्कूलों के तौर पर लॉन्च किया गया था। इस पूरी प्रक्रिया में डीन शर्मा और विभिन्न अकादमियों के बीच अनेकों वार्ताएं और संवाद आयोजित किए गए। इस साल उन सारे मसलों को जमीनी रूप देने का समय था, और दोनों स्कूलों के पाठ्यक्रमों पर मुहर लगाकर उन्हें अंतिम रूप देने का भी।

दरअसल संकाय की नियुक्ति महीनों तक चलने वाली प्रक्रिया रही। दोनों शुरुआती स्कूलों के लिए संकाय की नियुक्ति का काम पिछले साल ही शुरू कर दिया गया था, जिसके तहत विश्वविद्यालय को दुनियाभर से करीब 500 आवेदन प्राप्त हुए थे। कई साक्षात्कारों के बाद उनमें 11 संकाय सदस्यों को विश्वविद्यालय के शुरुआती दो स्कूलों के लिए नियुक्त किया गया। किसी भी नए प्रोजेक्ट का सदस्य बनने से पूर्व संकाय के मन भी बहुत सारे सवाल, सपने और अपेक्षाएं थीं। लेकिन वे सभी नालंदा टीम का हिस्सा बनकर दूर हो गईं, और वे सभी नालंदा के इस रोमांचक सफर का हिस्सा बन गए। डीन शर्मा उनके सवालों का जवाब देने के लिए हमेशा तत्पर रहीं, और संकाय के राजगीर पहुंचने से पहले ही उन्होंने उनकी सारी शंकाओं का समाधान कर दिया था।

अकादमिक वर्ष 2014 की औपचारिक शुरुआत से पहले ही नालंदा की पूरी टीम राजगीर में अवस्थित हो चुकी थी।

संकाय नियुक्ति के साथ ही पाठ्यक्रम निर्धारण का काम भी उतनी ही तत्परता से चल रहा था। दोनों ही मोर्चों पर डीन शर्मा ने बड़ी ही सावधानी से कमान संभाल रखी थी।

चूंकि दोनों ही स्कूल अपनी शुरुआती संरचना में थे, तो संकाय सदस्यों ने पाठ्यक्रम डिजाइन में अपना योगदान देकर उसे और भी उपयोगी बना दिया।

दोनों स्कूलों के पाठ्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशाला का आयोजन भी किया गया, जहां विषय से संबंधित अनेक विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया था, और इसके निर्धारण के लिए संयुक्त निर्णय ही लिया गया।

इकोलोजी एंड एनवायरमेंट स्टडीज में दो वर्षीय स्नातकोत्तर कोर्स के पाठ्यक्रम निर्धारण के लिए 25 अप्रैल 2014 को दिल्ली में एक वर्कशॉप का आयोजन

इस वर्कशॉप के बाद स्कूल ऑफ इकोलोजी एंड एनवायरमेंट स्टडीज (एसईईएस) के लिए पाठ्यक्रम का निर्धारण हुआ, और ये भी तय किया गया कि इसमें प्राकृतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानविकी को बराबर जगह देते हुए अध्ययन के समग्र रूप को वरीयता दी जाएगी। स्कूल का मकसद स्थानीय, प्रांतीय और वैश्विक पर्यावरणीय मसलों पर शोध है, जिसका मुख्य फोकस प्रयोगात्मक और फील्ड स्टडीज होगा। इसका शैक्षिक मकसद पर्यावरणीय मसलों का रचनात्मक समाधान निकालना है।

बहुविषयक स्कूल के तौर पर एसईईएस विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानविकी के संयोजन से ज्ञान प्राप्त करने के अवसर देखता है। स्कूल पर्यावरणीय मसलों पर पूर्वी और पाश्चात्य अवधारणा के बीच आई दूरी को भी पाटने की कोशिश करेगा। छात्रों को प्रोत्साहित किया जाएगा कि वे स्कूल के विस्तृत पाठ्यक्रम के जरिए कम से कम पर्यावरण की एक समस्या का हल देने की कोशिश करें, जिनसे आज समाज जूझ रहा है।

मास्टर्स के सभी छात्रों को 4 सत्रों में कम से कम 48 क्रेडिट्स लेने होंगे, इसके साथ उन्हें ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप भी मिलेगी। ये इंटर्नशि पदो सत्रों के बीच दिए जाने वाले अवकाश के मध्य दी जाएगी। पाठ्यक्रम में कोर और इलेक्टिव कोर्स का संयोजन सम्मिलित होगा।

पहले दो सत्रों में अनिवार्य बहुविषयक कोर्स होंगे, जो उन्हें विषय को समझने के लिए विस्तृत पृष्ठभूमि प्रदान करेंगे। अंतिम दो सत्रों में निजी रुचि पर आधारित विषयों में से चयन का विकल्प होगा। ये सत्र ज्ञान की गहराई और व्यक्तिगत शोध की योग्यता पर आधारित होंगे। पाठ्यक्रम के दौरान फील्ड वर्क पर जोर रहेगा, जिसमें परिसर के आसपास और प्रांतीय दौरे, असाइनमेंट्स व परियोजना शामिल होंगी। ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप में किया गया काम रिपोर्ट और सेमिनार में शामिल किया जाएगा। शोध निबंध डिग्री का मुख्य भाग रहेंगे।

मुख्य सहयोग

विश्वविद्यालय ने इस स्कूल के लिए कई मोर्चों पर महत्वपूर्ण सहयोग और करार किए हैं। स्कूल निम्न संस्थानों के साथ अपने संपर्क और शोध को मजबूत करता रहेगाः

स्कूल ऑफ फोरेस्ट्री एंड एनवायरमेंटल स्टडीज, येल यूनिवर्सिटी (यूएसए)

डिपार्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चरल एंड बायोलोजिकल इंजीनियरिंग (एबीई), यूनिवर्सिटी ऑफ इलीनॉइस एट अर्बन कैंपेन (यूएसए)

बॉरलॉग इंस्टीट्यूट ऑफ साउथ एशिया (बीसा, इंडिया)

निम्न विशेषज्ञ और संपर्क व्यक्ति मीटिंग का हिस्सा रहेः

डॉ. गोपा सभरवाल, उप कुलाधिपति, नालंदा विश्वविद्यालय

डॉ. अंजना शर्मा, डीन (अकादमिक योजना), नालंदा विश्वविद्यालय

प्रोफेसर टी.आर. राव, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च, मोहाली

डॉ. टी. मोहन राव, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, अहमदाबाद

डॉ. शरदचंद्र लेले, अशोका ट्रस्ट फॉर रिसर्च इन इकोलोजी एंड द एनवायरमेंट, बंगलोर

डॉ. गज़ाला शाहबुद्दीन, अंबेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली

डॉ. रोहन डिसूजा, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय

डॉ. विक्रम दयाल, इंस्टीट्यूट ऑफ इकोनॉमिक ग्रोथ

स्कूल निम्न क्षेत्रों में ध्यान केंद्रीत करेगाः

- मानवीय पारिस्थितिकी
- हाइड्रोलोजी/हाइड्रो
- आपदा प्रबंधन
- कृषि
- जलवायु परिवर्तन
- ऊर्जा अध्ययन

हिस्टोरिकल स्टडीज में दो–वर्षीय स्नातकोत्तर के लिए पाठ्यक्रम विकसित करने के लिए 28 अप्रैल और 1 मई 2014 को वर्कशॉप का आयोजन किया गया। 9 जुलाई 2014

इस वर्कशॉप के बाद स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज (एसएचएस) का पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया, और यह तय किया गया कि स्कूल ऐसा पाठ्यक्रम विकसित करेगा जिसमें नालंदा के इतिहास के अलावा विश्व और एशियाई इतिहास की मजबूत समझ होगी। आर्कियोलोजी, इतिहास और कला इतिहास के अध्ययन को क्षेत्र आधारित शोध कार्यक्रमों के जरिए सुदृढ़ किया जाएगा। इसी के साथ, पारंपरिक और आधुनिक भाषाओं के ज्ञान को शोध कार्य के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

छात्र वैश्विक इतिहास, सांस्कृतिक–राजनीतिक इतिहास, अर्थशास्त्र इतिहास, बौद्धिक इतिहास, वाचिक और दर्शनीय इतिहास, कला इतिहास और धार्मिक इतिहास पर विस्तृत समझ विकसित करेंगे।

एमए कोर्स में कुल 48 क्रेडिट्स होंगे। इसमें मुख्य, चयनित और भाषिक कोर्स के साथ एमए शोध सामग्री का पूरा होना भी शामिल होगा।

कोर्स पाठ्यक्रम क्रेडिट संरचना

3 मुख्य कोर्स बराबर होंगे 9 क्रेडिट्स (3X3)

8 वैकल्पिक कोर्स बराबर होंगे 24 क्रेडिट्स (3X8)

8 वैकल्पिक कोर्स बराबर होंगे 24 क्रेडिट्स (3X8)

3 भाषिक कोर्स बराबर होंगे 6 क्रेडिट्स (2X3)

निम्न विशेषज्ञ और संपर्क व्यक्ति मीटिंग का हिस्सा रहे:

डॉ. अंजना शर्मा,
नालंदा विश्वविद्यालय

डॉ. गोपा सभरवाल,
नालंदा विश्वविद्यालय

प्रोफेसर हरि वासुदेवन,
कोलकाता विश्वविद्यालय

डॉ. कशफ घानी,
नालंदा विश्वविद्यालय

डॉ. श्रमण मुखर्जी,
नालंदा विश्वविद्यालय

डॉ. यिन केर,
नालंदा विश्वविद्यालय

डॉ. सेमुयल राइट,
नालंदा विश्वविद्यालय

डॉ. अभिषेक अमर,
नालंदा विश्वविद्यालय

प्रोफेसर पंकज मोहन,
नालंदा विश्वविद्यालय

मुख्य सहयोग

विश्वविद्यालय ने इस स्कूल के लिए कई मोर्चों पर महत्वपूर्ण सहयोग और करार किए हैं। स्कूल निम्न संस्थानों के साथ अपने संपर्क और शोध को मजबूत करता रहेगा:

नालंदा–श्रीविजया सेंटर, इंस्टीट्यूट ऑफ साउथईस्ट एशियन स्टडीज (सिंगापुर)

चोलालोंगकोर्न यूनिवर्सिटी (थाईलैंड)

पीकिंग यूनिवर्सिटी (चीन)

आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (एएसआई, भारत)

यूरोपियन कनसोर्टियम फॉर एशियन फील्ड स्टडी (ईसीएएफ, फ्रांस)

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर एशियन स्टडीज (आईआईएएस, नीदरलैंड)

स्कूल निम्न क्षेत्रों में ध्यान केंद्रीत करेगा:

- वैश्विक इतिहास
- अंतर्एशियाई संपर्क
- पुरातत्व
- कला इतिहास
- आर्थिक इतिहास

विश्वविद्यालय दाखिला प्रक्रिया

किसी भी विश्वविद्यालय का अस्तित्व उसके छात्र होते हैं, और उनका चयन सबसे मुश्किल कार्य क्योंकि वे ही विश्वविद्यालय को परिभाषित करते हैं। तो लॉन्च की भागदौड़ में आधारभूत संरचना और अकादमिक योजना के बाद यह तीसरा सबसे जरूरी पहलू रहा। जैसा कि पहले भी बताया गया है कि विश्वविद्यालय ने अपने दो शुरुआती स्कूलों––स्कूल ऑफ इकोलोजी एंड ए नवायरमेंट स्टडीज और स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज––में दो वर्षीय स्नातकोत्तर प्रोग्राम के लिए अपने दरवाजे खोल दिए थे।

छात्रों के दाखिले को लेकर नीतियों और योजना पर चर्चा पिछले साल से ही होने लगी थी। इस साल यह तय किया गया कि प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए जिसमें हर छात्र का विविध स्तरों पर व्यक्तिगत साक्षात्कार हो सके, और आधार महज स्नातक स्तर पर प्राप्त अंक ही न हो। इसके अलावा हर छात्र पर खास ध्यान देने के लिए शुरुआती समूह को आकार में छोटा ही रखने का निर्णय लिया गया।

विश्वविद्यालय ने बड़े अखबारों में प्रचार के माध्यम से दाखिले की घोषणा की, और दोनों स्कूलों के सहयोगी संस्थानों में भी एडमिशन नोटिस भेज दिया गया।

सवहनीयता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को बरकरार रखते हुए ने दाखिला प्रक्रिया को कागजमुक्त बनाए रखने का ही फैसला किया। इसके लिए बहुत से वेब पॉर्टल का इस्तेमाल किया गया। यह विश्वविद्यालय का पहला साल था, तो ये तय था कि चुनिंदा छात्रों को ही दाखिला दिया जाएगा। दोनों स्कूलों में दाखिले की मुख्य योग्यता स्नातक स्तर की डिग्री के अलावा, अंग्रेजी भाषा में दक्षता थी। हालांकि ये भी तय था कि जरूरत पड़ने पर भारतीय और गैर–भारतीय छात्रों को इंग्लिश की खास कोचिंग और सप्लीमेंट्री अंग्रेजी भाषा लैब्स भी उपलब्ध कराई जाएंगी।

नालंदा विश्वविद्यालय में दाखिले की प्रक्रिया दो स्तरों पर पूरी की गई, जहां पहले उनकी अकादमिक योग्यता को परखते हुए एडमिशन फॉर्म के आधार चयन किया गया। दूसरा चरण विभिन्न पहलुओं पर उनका दृष्टिकोण और लिखित कार्य रहा।

चुने हुए छात्रों का फिर गठित कमेटी द्वारा साक्षात्कार लिया गया, उस कमिटी का गठन उप–कुलाधिपति ने किया। निजी साक्षात्कार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए लिए गए। साक्षात्कार का मानदंड संचार योग्यता, आत्मविश्वास, सामान्य ज्ञान और पसंद की विषय से संबंधित रहा। ये भी तय था कि जरूरत पड़ने पर गुणात्मक मूल्यांकन को भी अपनाया जाएगा।

विश्वविद्यालय द्वारा संपूर्ण या आंशिक फीस पर छूट के रूप में छात्रवृति की भी व्यवस्था की गई थी। जिन छात्रों को वित्त सहयोग की आवश्यकता हो। छात्रवृत्ति जरूरत के आधार पर देने का निर्णय किया गया था।

जिन छात्रों को वित्तीय सहयोग की आवश्यकता थी, उन्हें दाखिला फॉर्म भरते हुए इसका ब्यौरा देना था। एक वित्त कमेटी विविध स्तरों पर उनका मूल्यांकन कर निर्णय लेगी कि उर्पयुक्त आवेदक इसके योग्य है या नहीं।

विश्वविद्यालय को विविध ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से 2404 फॉर्म प्राप्त हुए। लगभग 20 देशों के छात्रों ने नालंदा विश्वविद्यालय में अपनी रुचि दिखाई। हालांकि अधिकांश फॉर्म भारत से ही प्राप्त हुए। उनमें से 118 आवेदकों का चयन उनके फॉर्म की पूर्णता के आधार पर किया गया।

नामांकण और साक्षात्कार की प्रक्रिया के बाद विश्वविद्यालय की शुरुआती कक्षाओं में दाखिले के लिए 15 छात्रों का चुनाव किया गया।

दाखिला प्रक्रिया

दाखिले के लिए चयन की प्रक्रिया निम्न तरीके से संपन्न हुईः

आवेदन पत्र विश्वविद्यालय के मकसद और अंक के कट ऑफ के जरिए चयन किए गएः

भारतीय छात्रों के लिए कट ऑफ का निर्धारण स्नातक स्तर पर किसी भी केंद्रीय विश्वविद्यालय से 60 प्रतिशत अंक रखा गया।

भारतीय छात्रों के लिए कट ऑफ का निर्धारण स्नातक स्तर पर किसी भी दूसरे विश्वविद्यालय से 65 प्रतिशत अंक रखा गया।

गैर–भारतीय छात्रों के लिए कट ऑफ का निर्धारण ग्रेड प्रणाली के आधार पर 3.5 औसत अंक रखा गया (4.0 के पैमाने पर)

चयनित छात्रों का स्काइप के माध्यम से साक्षात्कार लिया गया, जिसका नेतृत्व डॉ. अंजना शर्मा, डीन (अकादमिक योजना) और सकाय सदस्यों ने किया।

नई शुरुआत

1 सितंबर 2014 के ऐतिहासिक दिन नालंदा विश्वविद्यालय ने राजगीर में आखिरकार अपने दो स्कूलों—स्कूल ऑफ इकोलॉजी एंड एनवायरमेंट स्टडीज (एसईईस) और स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज (एसएचएस)—का शुभारंभ कर दिया।

महीनों की मेहनत रंग लाई और आखिरकार वह घड़ी आ पहुंची। यद्यपि विश्वविद्यालय में हर कोई सिर से लेकर पैर तक काम में डूबा हुआ था, और पूरी तरह से राजगीर टाउन में रम गया था, तो यहां की हवा में भी एक रोमांच सा घुल गया और वह ऐतिहासिक पल आ ही पहुंचा। छात्रों के ''शुरुआती'' समूह ने शहर में आना शुरू कर दिया, और रेजिडेंस हॉल में अपने पैर जमा दिए। विश्वविद्यालय समुदाय भी युवाओं की उपस्थिति और जोश से खुद को जीवंत महसूस करने लगा।

राजगीर आने वाले लॉन्च समारोह से उत्साहित हो उठा। इससे पहले कि हम सारी सरगर्मियों को समझ पाते प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से बहुत सारे पत्रकार इस पल को अपने कैमरे में कैद करने आ पहुंचे। अधिकारी, संकाय और छात्रों ने खुद को मिली इस शोहरत का खूब आनंद उठाया, और उन्होंने खूब साक्षात्कार दिए। ये सच में बहुत बड़ा पल था, जब मीडिया के माध्यम से पूरी दूनिया को पता चल गया कि नालंदा में फिर से क्लासें शुरू होने वाली हैं।

उत्साह से घिरे छात्रों को उनकी जिम्मेदारी का अहसास कराना और नए माहौल में व्यवस्थित करना विश्वविद्यालय का दायित्व था। इसी के साथ उन्हें विश्वविद्यालय के आदर्शों और नजरिये को भी समझना था, जिसके लिए क्लासें शुरू करने से पहले तीन–दिवसीय ओरिएंटेशन प्रोग्राम का आयोजन किया गया। इस प्रोग्राम में छात्रों के साथ–साथ उन्हें राजगीर तक छोड़ने आने वाले उनके अभिभावक भी आमंत्रित थे।

19 नवंबर 2014 को मूहुर्त की औपचारिक शुरुआत माननीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज के हाथों से की गई। जिससे सितंबर में विश्वविद्यालय ने बहुत से लोगों का ध्यान आकर्षित किया और यह नालंदा विश्वविद्यालय के इतिहास में एक अहम् पल बन गया।

Nālandā
UNIVERSITY
WELCOME NALANDA UNIVERSITY PIONEERS 2014-16

Nālandā
UNIVERSITY
WELCOME NALANDA UNIVERSITY PIONEERS 2014-16

29 अगस्त 2014 को विश्वविद्यालय में हुए ओरिएंटेशन में, स्कुल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज के छात्र अकिरो नाकामुरा स्टूडेंट बुक में साइन करते हुए

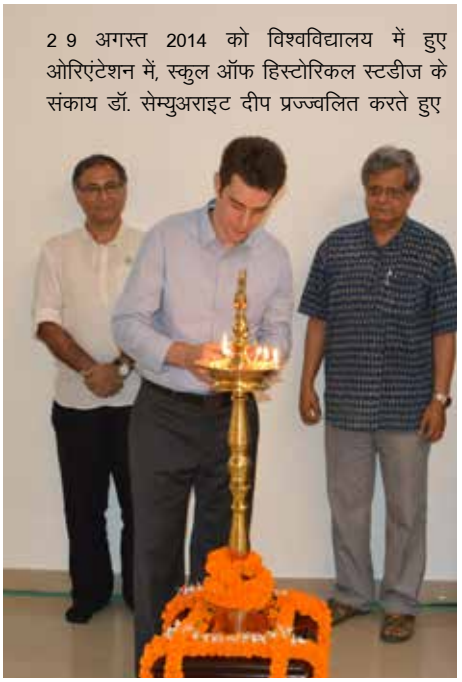

2 9 अगस्त 2014 को विश्वविद्यालय में हुए ओरिएंटेशन में, स्कुल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज के संकाय डॉ. सेम्युअराइट दीप प्रज्ज्वलित करते हुए

शुरुआती बैच के लिए ओरिएंटेशन प्रोग्राम

शुरुआती बैच के छात्रों के लिए तीन दिवसीय ओरिएंटेशन प्रोग्राम का आयोजन 29 अगस्त, 1 और 2 सितंबर, 2014 को किया गया।

शुरुआती छात्रों के लिए ओरिएंटेशन प्रोग्राम का श्रीगणेश 29 अगस्त को राजगीर इंटरनेशनल कंवेंशन सेंटर में हुआ। इस प्रोग्राम में छात्रों के साथ–साथ अभिभावकों ने भी भाग लिया, जो उनके साथ उन्हें छोड़ने के लिए राजगीर तक आए थे।

नालंदा विश्वविद्यालय अपने लिए एक मानदंड स्थापित करना चाहता है। परंपरा से हटकर द्वीप प्रज्जवलन का अवसर छात्रों और उनके अभिभावकों को प्रदान किया गया, जिससे वे भी खुद को खास महसूस करें।

उपकुलाधिपति, डॉ. गोपा सभरवाल ने पहले बैच के छात्रों, संकाय और स्टाफ सदस्यों का स्वागत किया, जो इस नए विश्वविद्यालय पहली बार जुड़े थे। उन्होंने नालंदा के दृष्टिकोण पर जोर देते हुए इसकी पृष्ठभूमि के बारे में बात की। डीन (अकादमिक योजना), डॉ. अंजना शर्मा ने इसका एतिहासिक संदर्भ और वर्तमान महत्ता को समझाते हुए प्रेरक व्याख्यान दिया। संकाय सदस्यों और छात्रों ने अपना परिचय दिया और बताया कि उनके लिए नालंदा का मतलब क्या है। कुछ अभिभावकों ने भी बताया कि यह पल खुद उनके लिए कितना भावुक और एतिहासिक था। वहां के माहौल में गजब का उत्साह था, और ''स्टूडेंट बुक ऑफ एनयू'' में अपनी भावनाएं दर्ज करते हुए छात्र बहुत भावुक हो गए।

समारोह का समापन नालंदा विश्वविद्यालय समुदाय के पहले डिनर के साथ हुआ, जहां सभी को एक–दूसरे को जानने का मौका मिला।

सितंबर 1 और 2 को भी छात्रों का ओरिएंटेशन प्रोग्राम जारी रहा, जहां कुछ घटनाएं तो स्कूल से संबंधित थीं, और कुछ कॉमन। ओरिएंटेशन प्रोग्राम के दौरान वहां की सैर भी इसी का हिस्सा थी। स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज ने नालंदा के खंडहरों की सैर कराई, तो स्कूल ऑफ इकोलोजी एंड एनवायरमेंटल स्टडीज ने राजगीर के पहाड़ों की सैर का आयोजन रखा। स्थानीय समुदाय से संपर्क कराने के सिलसिले में छात्रों को अध्ययन दौरे पर ले जाकर सरिल चाक गांव में किसानों से बात करने का मौका भी दिया गया। वो किसान मशरूम की खेती के लिए जाने जाते हैं।

ओरिएंटेशन प्रोग्राम के तुरंत बाद नियमित कक्षाएं शुरू कर दी गईं।

29 अगस्त 2014 को ओरिएंटेशन के बाद छात्र व अभिभावक रात्रि भोज करते हुए

विदेश मंत्री सुषमा स्वराज द्वारा औपचारिक उद्घाटन

विश्वविद्यालय का औपचारिक उद्घाटन 19 सितंबर 2014 को विदेश मंत्री सुषमा स्वराज द्वारा किया गया। एक बार फिर से हवा में उत्साह का माहौल था, बस इस बार की गतिविधियां ज्यादा उमंग भरी और बड़े पैमाने पर थीं।

नालंदा विश्वविद्यालय ने माननीय सुषमा स्वराज (विदेश मंत्री), श्री जीतन राम मांझी (बिहार के मुख्यमंत्री), बोर्ड सदस्य––लॉर्ड मेघनाद देसाई और श्री एन.के. सिंह, और श्री अनील वाधवा, सचिव (पूर्व) विदेश मंत्रालय की मेजबानी की।

समारोह में उपस्थित विदेशी मेहमान जैसे लिम थुआन कुआन, भारत में सिंगापुर के उच्चायुक्त और चलित मणित्याकुर, भारत में थाईलैंड के राजदूत। ऑस्ट्रेलिया, वियतनाम, जर्मनी, जापान और लाओस के राजनयिक भी वहां उपस्थित थे।

राजगीर इंटरनेशनल कंवेंशन सेंटर में मुहुर्त से पहले श्रीमती सुषमा स्वराज और श्री जीतन राम मांझी ने स्थायी परिसर की जगह पर वृक्षारोपण भी किया।

मुहुर्त प्रोग्राम में सबका स्वागत करते हुए, उपकुलाधिपति, डॉ. गोपा सभरवाल ने कहा, ''आखिरकार वह समय आ ही गया। नालंदा की विरासत को दोबारा से खड़ा करने के अवसर में हमें जहां इसकी परंपरा को बरकरार रखने का मौका मिला, वहीं रचनात्मकता से हमने से इसकी खास अध्ययन पद्धति को भी बरकरार रखा।''

इस अवसर पर बोलते हुए श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा, "नालंदा की कोशिश ज्ञान को हर आयाम पर परखते हुए उसे समाज में प्रचारित करने की थी। समझा जाए तो यह एक चुंबक है, जो पूर्व और पश्चिम दोनों दिशाओं से प्रतिभाओं को आकर्षित करती है, और भारत का संपूर्ण जगत से संपर्क कराती है। नालंदा पुल था, और नालंदा ही झरना। नया नालंदा विश्वविद्यालय भी इस परंपरा को स्थापित करेगा।"

उन्होंने यह भी घोषणा की कि विश्वविद्यालय ने तय किया है वह महज पूर्वी एशियाई देशों के साथ ही नहीं, बल्कि दूसरे देशों से भी करार करेगी। आगे उन्होंने कहा कि केंद्र ने विश्वविद्यालय के कलए 2,727 करोड़ प्रदान किए हैं, जिससे अगले 10 सालों में इसे विश्व–स्तरीय इमारत बनाया जाएगा।

बिहार के मुख्यमंत्री, श्री जीतन राम मांझी ने कहा, ''बिहार के लिए यह अकादमिक लॉन्च गर्व का विषय है। नालंदा के प्राचीन खंडहरों में एक विश्व–स्तरीय विश्वविद्यालय की स्थापना हम सबके लिए हर्ष की बात है।''

विश्वविद्यालय में औपचारिक उद्घाटन के दौरान दीप प्रज्ज्वलित करते हुए विदेश मंत्री सुषमा स्वराज

विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, डीन (अकादमिक योजना) डॉ. अंजना शर्मा के साथ परिसर में वृक्षारोपण करते हुए

विश्वविद्यालय में औपचारिक उद्घाटन के अवसर पर बिहार के मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी, विदेश मंत्री सुषमा स्वराज के साथ उप–कुलाधिपति और अन्य

अकादमिक गतिविधियां

यह पहला अकादमिक साल था। विश्वविद्यालय ने अपना अकादमिक कैलेंडर भी तैयार कर लिया था, जिसमें अकादमिक गतिविधियां अंकित होने लगी थीं, जिसमें वैश्विक विद्वानों के लैक्चर्स और वार्ता के अलावा क्षेत्र दौरा और दूसरे समारोह भी शामिल थे। नालंदा विश्वविद्यालय ने नई दिल्ली के प्रकाशक मनोहर पब्लिशर्स के साथ मिलकर दो पांडुलिपियों को भी अनुमोदित कर दिया। इसकी श्रृंखला संपादन का कार्य डॉ. अंजना शर्मा, डीन (अकादमिक योजना) संभालेंगी।

यद्यपि विश्वविद्यालय ने कुलाधिपति प्रोफेसर अमर्त्य सेन के विशिष्ठ व्याख्यान की मेजबानी दिल्ली में की, लेकिन दूसरे व्याख्यान राजगीर में ही आयोजित किए गए। विश्वविद्यालय ने उनमें से कुछ व्याख्यान रिकॉर्ड किए, और उन्हें यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म पर शेयर भी किया। इन व्याख्यानों के विषय विविध रहे, 'मेल्टिंग डाउन द अरब स्प्रिंग' से 'इफेक्ट ऑफ रेनफॉल ऑन चाइल्ड हेल्थ' तक।

नालंदा के पाठ्यक्रम में फील्डवर्क पर खास जोर दिया गया है, जिसे पोस्टग्रेजुएट के दोनों स्कूलों ने अपने कोर्स में जगह दी है। अध्ययन दौरे, असाइनमेंट्स और प्रोजेक्ट भी पाठ्यक्रम का अहम् हिस्सा रहे हैं। विश्वविद्यालय के प्रथम अकादमिक वर्ष में अध्ययन दौरे खास रहे।

सभी अकादमिक गतिविधियां शोध, बहुविषयक और प्रयोगात्मक अध्ययन को ध्यान में रखकर ही निर्धारित की गईं, और इसने नालंदा विश्वविद्यालय के पोस्टग्रेजुएट प्रोग्राम को विशिष्ट बना दिया। इनमें से ज्यादातर गतिविधियां दोनों स्कूलों के छात्रों के लिए खुली थीं।

क्लास के बाहर अध्ययन को एक कसौटी के तौर पर स्थापित किया गया और पूरा अकादमिक समुदाय उत्सुकता से इन गतिविधियों को देख रहा है।

व्याख्यान और वार्ता

विश्वविद्यालय ने रचनात्मक और आलोचनात्मक विचारों के प्रोत्साहन के लिए कई व्याख्यान और वार्ताएं आयोजित किए, जिससे इसके पहले साल में नए ज्ञान को प्रसारित किया जा सके, और परस्पर विचारों का आदान–प्रदान हो सके। पहले अकादमिक वर्ष की शुरुआत से ही ये व्याख्यान और वार्ताएं क्रमशः बढ़ती गईं, और इसने वो विचारधारा स्थापित की जो सालों तक चलने वाली थी।

16 अक्टूबर 2014 को प्रोफेसर अमर्त्य सेन ने विशिष्ट व्याख्यान दिया।

प्रोफेसर अमर्त्य सेन द्वारा दिए गए विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन 16 अक्टूबर 2014 को नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी, तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। भारत के उपराष्ट्रपति, श्री हामिद अंसारी भी इस अवसर पर मौजूद थे।

वार्ता का विषय था, ''समकालीन दुनिया में नालंदा की प्रासंगिकता' जहां प्रोफेसर सेन ने बताया कि कैसे नालंदा विश्वविद्यालय 'अतीत और वर्तमान के बीच एक कड़ी है, और भविष्य के लिए एक सेतु।''

ऊपर

विशिष्ट व्याख्यान के दौरान भारत के उपराष्ट्रपति, श्री हामिद अंसारी का अभिवादन करते हुए प्रोफेसर अमर्त्य सेन

नीचे

विशिष्ट व्याख्यान के बाद छात्रों के साथ प्रोफेसर अमर्त्य सेन

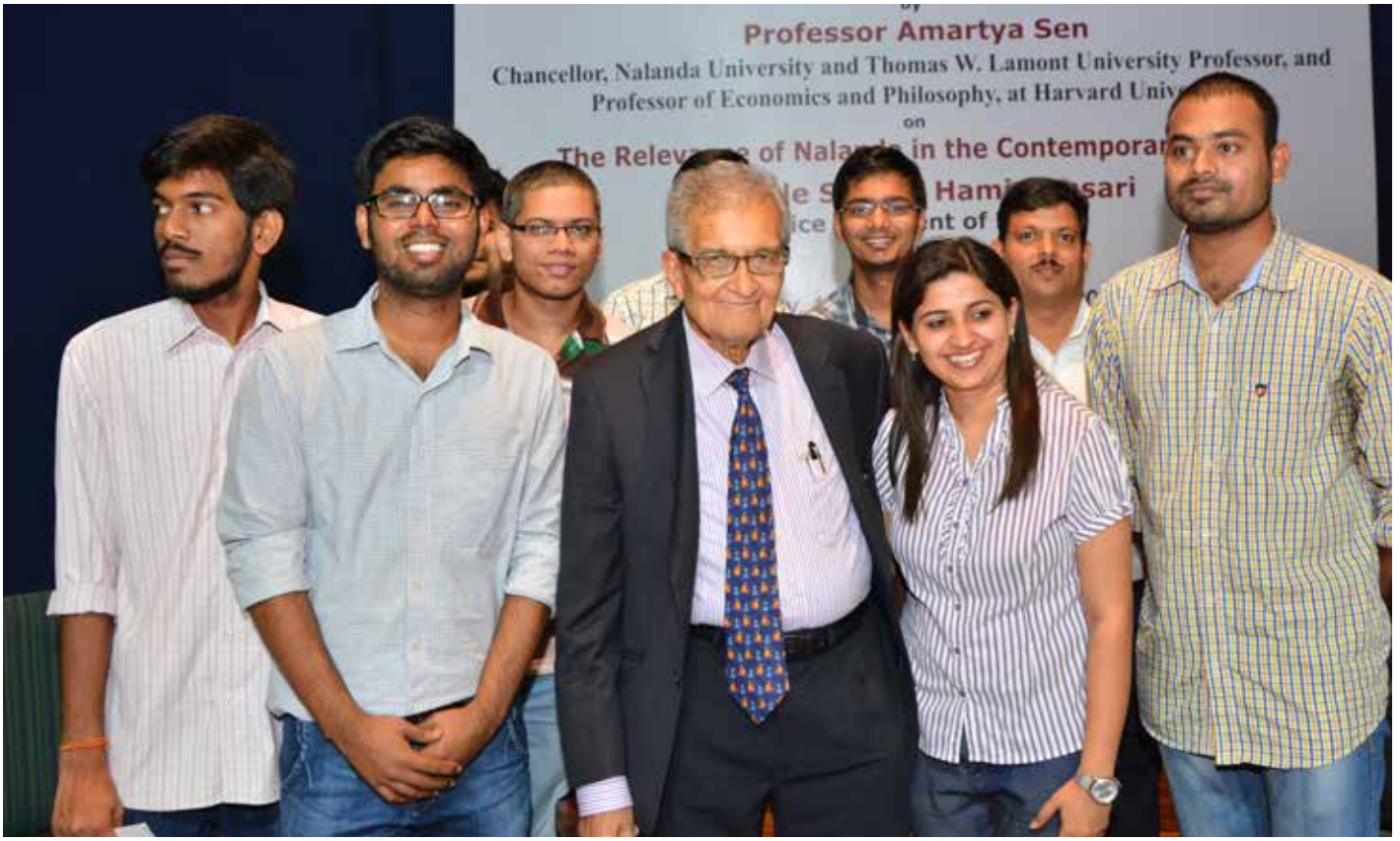

विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन राजगीर में

मिनेसोटास्पोक यूनिवर्सिटी के आर्ट हिस्ट्री विभाग के प्रोफेसर फ्रेड्रिक आशेर ने ''इंडिया, मगध, नालंदाः इकोलोजी एंड ए प्रीमॉडर्न वर्ल्ड सिस्टम'' विषय पर 19 सितंबर 2014 को व्याख्यान दिया।

शिव नादर यूनिवर्सिटी के हिस्ट्री विभाग के प्रोफेसर किंगशुक चैटर्जी ने ''मेल्टिंग डाउन द अरब स्प्रिंग'' विषय पर 22 नवंबर 2014 को व्याख्यान दिया।

सैम हाउसटन स्टेट यूनिवर्सिटी, हंट्सविले, टीएक्स, यूएसए के डॉ. संतोष कुमार ने ''इफेक्ट ऑफ रेनफॉल ऑन चाइल्ड'' विषय पर 5 जनवरी 2015 को व्याख्यान दिया।

डॉ. तानसेन सेन, नालंदा विश्वविद्यालय शासकीय बोर्ड के सदस्य और न्यूयॉर्क की सिटी यूनिवर्सिटी में डिपार्टमेंट ऑफ हिस्ट्री के प्रोफेसर ''पोलिटिक्स ऑफ पिलग्रीमेजः जुआनजेंग'स मीटिंग विथ इंडियन रूलर'' विषय पर बोलते हुए। 14 जनवरी 2015

दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग से डॉ. पारुल पंध्य धर ने ''इंडिया एंड साउथ ईस्ट एशियाः द आइकनोग्राफी ऑफ अर्ली कल्चरल इंटरेक्शन'' विषय पर 5 फरवरी 2015 को व्याख्यान दिया।

डेक्कन कॉलेज, पुणे के पुरातत्व विभाग से प्रोफेसर के. पद्धय ने ''द पास्ट इन द प्रेजेंट इन इंडिया'' विषय पर 19 फरवरी 2015 को व्याख्यान दिया।

खुदा बख्श ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना के डायरेक्टर पोफेसर इम्तियाज़ अहमद ने ''शाहनामा कलेक्शन एट खुदा बख्श लाइब्रेरी'' विषय पर 26 फरवरी 2015 को व्याख्यान दिया।

टोक्यो विश्वविद्यालय के ग्रेजुएट स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशियोलोजी से प्रोफेसर मिनोवा केन्नयो ने ''बुद्धिस्ट मेडीटेशन इन थेरवाडा एंड महायानः कंसर्निंग ऑन इट्स सिमिलेरिटी'' विषय पर 14 मार्च 2015 को व्याख्यान दिया।

जर्मनी की लेइपजिग यूनिवर्सिटी के इंस्टीट्यूट ऑफ एंथ्रोपोलोजी से प्रोफेसर उर्सुला राव ने ''लोकल बॉडीज इन ग्लोबल सिटीज'' विषय पर 19 मार्च 2015 को व्याख्यान दिया।

पैरिस से कॉलेज दे फ्रांस की प्रोफेसर एनी चेंग ने ''चेलेंजिंग चाइनीज यूनिवर्सेलिटीः हाउ सेंट्रल इज द मिडिल किंगडम?'' विषय पर 23 मार्च 2015 को व्याख्यान दिया।

कोलकाता विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग से प्रोफेसर अमित डे ने ''एनवायरमेंट, फोल्क कल्चर एंड इस्लाम इन मॉडर्न बंगाल इन हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव' विषय पर 12 मार्च 2015 को व्याख्यान दिया।

सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ पोस्ट–हार्वेस्ट इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलोजी, लुधियाना के भूतपूर्व डायरेक्टर डॉ. रामभाउ टी. पाटिल ने ''स्ट्रेटेजिक अप्रोच फॉर पोस्ट–हार्वेस्ट टेक्नोलोजी रिसर्च, एजुकेशन एंड डवलपमेंट इन हॉरीकल्चरल सेक्टर' विषय पर 24 मार्च 2015 को व्याख्यान दिया।

राजगीर परिसर में अतिथि प्रोफेसर

स्कूल ऑफ इकोलोजी एंड एनवायरमेंट स्टडीज ने राजगीर में छात्रों को पढ़ाने के लिए निम्न अतिथि अकादमियों को आमंत्रित किया।

प्रोफेसर टी. आर. राव, स्कूल ऑफ बायोलोजी, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड रिसर्च, मोहाली, सितंबर 2014।

डॉ. अनिंदिता रॉय साहा, इंद्रप्रस्थ कॉलेज फॉर वूमन, नई दिल्ली के अर्थशास्त्र विभाग से 30 अक्टूबर 2014।

प्रोफेसर अरूण कुमार सिन्हा, सांख्यिकी विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार, नवंबर 2014

डॉ. अंकिला जे. हायरमेथ, अशोका ट्रस्ट फॉर रिसर्च इन इकोलोजी एंड द एनवायरमेंट, नई दिल्ली, नवंबर 2014।

नए प्रकाशन

नालंदा विश्वविद्यालय ने नई दिल्ली के मनोहर पब्लिशर्स के साथ निम्न पांडूलिपियों को अनुमोदित किया। डॉ. अंजना शर्मा, डीन (अकादमिक योजना) इसकी सीरिज एडिटर रहीं:

नालंदा महाविहारः ए स्टडी ऑफ एन इंडियन पाला पीरियड बुद्धिस्ट साइट एंड ब्रिटिश हिस्टोरिकल आर्कियोलोजी, 1861–1938 बाय मैरी स्टुवर्ट।

सेक्रेड साइट्स एंड सेक्रेड आइडेंटिटीजः ए स्टडी ऑफ नालंदा एंड इट्स विसिनिटी (सीः 600–1200 एडी) बाय दिवाकर सिंह।

अध्ययन यात्रा

अध्ययन यात्रा शोध कार्य का महत्वपूर्ण भाग है और विश्वविद्यालय के दोनों स्कूल इसके लिए प्रतिबद्ध हैं। वे अपने छात्रों को कक्षा के अलावा बाहरी दुनिया में भी वास्तविक ज्ञान के लिए लेकर गए। नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन यात्रा की शुरुआत बसंत सत्र के साथ हुई।

बिहारशरीफ दरगाह पर एक दिवसीय यात्रा

बिहारशरीफ दरगाह पर इस अध्ययन यात्रा का आयोजन डॉ. कश्शफ घनी ने स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज के छात्रों के लिए 26 फरवरी 2015 को किया।

मखदुम कुंड पर एक दिवसीय यात्रा

बिहारशरीफ दरगाह के बाद डॉ. कश्शफ घनी ने अपने छात्रों को 13 मार्च 2015 को मुस्लिम संत के गर्म पानी के सोते पर ले जाने का आयोजन किया।

बीसा राउ (पूसा) की पांच दिवसीय यात्रा

बॉरलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया (बीसा) और राजेन्द्र एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी (राउ) पूसा के लिए डॉ. प्रभाकर शर्मा और प्रोफेसर निग्गोल सेओ ने स्कूल ऑफ इकोलोजी एंड एनवायरमेंट साइंस के छात्रों के लिए 11–15 मार्च 2015 को पांच दिवसीय यात्रा का आयोजन किया।

मुंगेर, भागलपुर और विक्रमशिला के लिए चार दिवसीय यात्रा

मुंगेर, भागलपुर और विक्रमशिला की चार दिवसीय यात्रा का आयोजन डॉ. मुरारी और डॉ. श्रमन मुखर्जी ने स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज के छात्रों के लिए 29 मार्च–1 अप्रैल 2015 को किया।

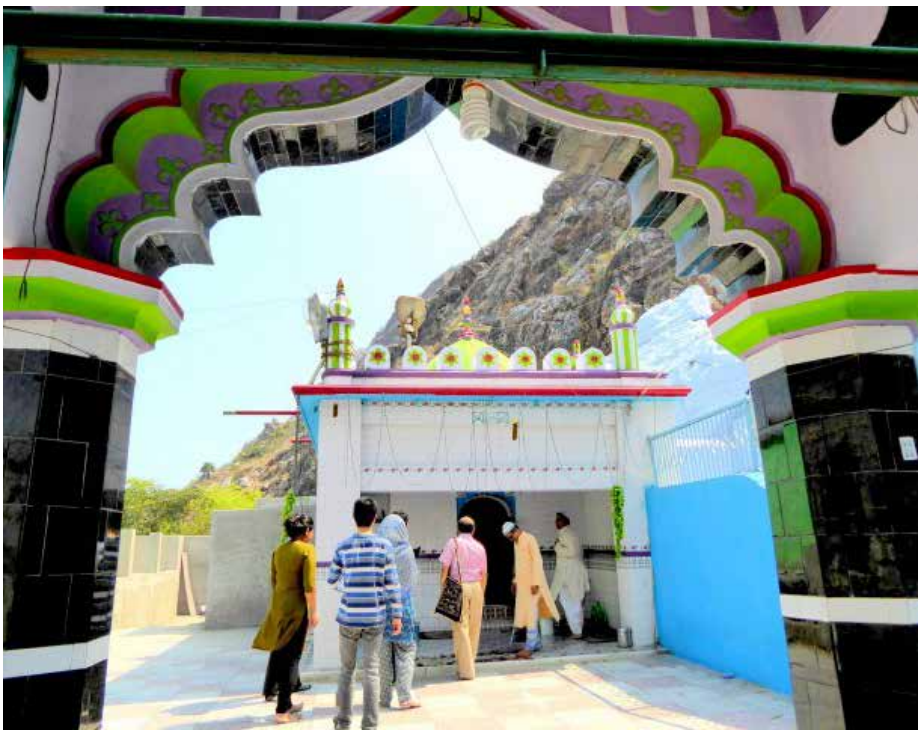

बायें से घड़ी की सूई की दिशा में

मुंगेर और भागलपुर में अध्ययन यात्रा के दौरान छात्र और अध्यापक मीर कासिम सुरंग में। मार्च–अप्रैल 2015
मुंगेर और भागलपुर में अध्ययन यात्रा के दौरान छात्र और अध्यापक गंगा नदी में नौका विहार करते हुए।
मुंगेर और भागलपुर में अध्ययन यात्रा के दौरान छात्र और अध्यापक सुल्तानगंज, भागलपुर में चट्टान से काटकर बनाई हुई कलाकृति देखते हुए।
मुंगेर और भागलपुर में अध्ययन यात्रा के दौरान भागलपुर के बुनकरों से मिलते हुए छात्र और अध्यापक, बिहार, मार्च।
बिहारशरीफ सूफी दरगाह में अध्ययन यात्रा, फरवरी 2015।

परिसर में जीवन

अकादमिक सत्र शुरू होते ही फैकल्टी सदस्य और छात्रों ने परिसर में आकर इसे पूरी तरह जीवंत कर दिया। चूंकि फैकल्टी के कई सदस्य और वरिष्ठ कर्मचारी तथागत आवासीय हॉल में छात्रों के साथ रहने वाले थे, तो परिसर में घनिष्ठता का वातावरण बन गया, जहां बहुत सी गतिविधियां और समारोह आयोजित हुए। साथ में खाना खाने से सबको एक-दूसरे के करीब आने का मौका मिला। राजगीर के पहाड़ों पर तात्कालिक ट्रेकिंग और पटना के साप्ताहंत दौरों ने समुदाय को एक-दूसरे से जुड़ने का मौका दिया।

ऐसे कई मौके आए जब विश्वविद्यालय परिवार ने सबके साथ उत्सव मनाया, जैसे स्थापना दिवस, भारतीय गणतंत्र दिवस, दिवाली और होली। इन समारोह में छात्रों, फैकल्टी और प्राध्यापकों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। भारतीय गणतंत्र दिवस पर विश्वविद्यालय ने प्रचलित परंपरा से अलग करने का निर्णय लिया। जहां अधिकांश विश्वविद्यालयों में ध्वजारोहण किसी सम्मानीय हस्ती द्वारा कराया जाता है, वहीं नालंदा में ये अवसर इसके छात्रों को प्रदत किया गया। खेलों में किक्रेट और कुछ दूसरे खेलों के लिए टीम गठन के मौके पर छात्रों की प्रतिभा सामने आई।

प्रत्येक सप्ताह की कुछ योजना के साथ सभी लोग बहुत व्यस्त रहे और साथ में सीखते व उत्सव मनाते रहे।

अतिथियों के आगमन और उनसे सजीव संवाद ने भी परिसर की जिंदगी में जान फूंक दी। कुलाधिपति प्रोफेसर अमर्त्य सेन के आने से जहां छात्रों में रोमांच था, वहीं फैकल्टी और स्टाफ भी खासे उत्साहित थे।

विश्वविद्यालय समुदाय के साथ कुलाधिपति

कुलाधिपति, प्रोफेसर अमर्त्य सेन, जो सितंबर में विश्वविद्यालय के शुभारंभ के अवसर पर नहीं आ पाए थे, उन्होंने 14 अक्टूबर 2014 का पूरा दिन विश्वविद्यालय समुदाय के साथ बिताया। समग्र विश्वविद्यालय उनका बड़ी बेसब्री से इंतजार कर रहा था। तथागत परिसर में हर कोई उनके स्वागत के लिए तैयार खड़ा था। छात्रों ने पारंपरिक भारतीय तरीके से फूलों और दीये से उनका स्वागत किया।

वह राजगीर हॉल में छात्रों के साथ चलकर गए, जहां छात्रों ने उन्हें इस छोटे से पहाड़ी शहर में अपनी जिंदगी और अनुभव के बारे में बताया। दोपहर में भोजन पर वह फैकल्टी के सदस्यों से मिले और फिर स्टाफ के सदस्यों से बात की।

बिहार के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री नीतिश कुमार के साथ कुलाधिपति अमर्त्य सेन और उपकुलाधिपति गोपा सभरवाल

नालंदा विश्वविद्यालय में छात्रों और संकाय सदस्यों के साथ कुलाधिपति अमर्त्य सेन। 14 अक्टूबर 2014

कुलाधिपति अमर्त्य सेन राजगीर में छात्रों के साथ चहलकदमी करते हुए

राजगीर महोत्सव में भाग लेता विश्वविद्यालय समुदाय

छात्रों, फैकल्टी और स्टाफ सदस्यों ने जनवरी में राजगीर में होने वाले राजगीर महोत्सव में भाग लिया। राजगीर महोत्सव संगीत और नृत्य का वार्षिक महोत्सव है, जिसका आयोजन नालंदा जिला प्रशासन द्वारा बिहार सरकार के सांस्कृतिक और पर्यटन विभाग के सहयोग से किया जाता है।

इसकी शुरुआत वर्ष 1986 में हुई थी, तब इसे राजगीर नृत्य महोत्सव के नाम से जाना जाता था। तीन दिवसीय इस समारोह को वर्ष 1989 तक बिहार का पर्यटन विभाग ही प्रायोजित कर रहा था। वर्ष 1994 में इसे फिर से शुरू किया गया, तब से यह एक बड़ा उत्सव बन गया।

देशभर के जाने–माने कलाकारों को इस समारोह में प्रदर्शन के लिए आमंत्रित किया जाता है। यहां होने वाली प्रतिस्पर्द्धाओं में तांगा रेस भी प्रमुख है। समारोह का आयोजन किला मैदान में किया जाता है, जिसकी पृष्ठभूमि में रत्नागिरी की आलीशान पहाड़ दिखाई देते हैं।

नालंदा विश्वविद्यालय के फंड में प्रमुख भूमिका निभाने वाली बिहार सरकार हर साल विश्वविद्यालय के सदस्यों को विशेष अतिथि के रूप में समारोह में आमंत्रित करती है।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर छात्रों ने एसडीएम राजगीर से मुलाकात की

विश्वविद्यालय के छात्रों ने 25 जनवरी 2015 को राजगीर के सब–डिवीजनल मेजिस्ट्रेट (एसडीएम) से मुलाकात की। उन्होंने इस दिन की महत्ता और लोकतंत्र से जुड़े दूसरे मसलों पर बात की।

वर्ष 2011 में भारत सरकार ने हर साल 25 जनवरी को मतदाता दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया। यह युवा मतदाताओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से शुरू किया गया, वो मतदाता जो 18 का होने पर पहली बार मतदाता सूची में अपना नाम लिखवाने वाले थे।

इस दिन युवा मतदाताओं को उनका इलेक्टोरल फोटो आईडेंटीटी कार्ड (ईपीआईसी) दिया गया और एक बैज भी, जिस पर लिखा था, 'मुझे मतदाता बनने पर गर्व है।'

राजगीर एसडीएम कार्यालय में नालंदा विश्वविद्यालय के छात्रों और एसडीएम की मुलाकात के लिए विशेष इंतजाम किए गए थे।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर एसडीएम राजगीर के साथ, 25 जनवरी 2015

राजगीर महोत्सव में छात्र और संकाय, जनवरी 2015

नालंदा विश्वविद्यालय में होली उत्सव, मार्च 2015

नालंदा विश्वविद्यालय में दिवाली उत्सव, अक्टूबर 2014

विश्वविद्यालय में मनाए गए पारंपरिक उत्सव

विश्वविद्यालय समुदाय पारंपरिक त्यौहार जैसे दिवाली, क्रिसमस और होली मनाने के लिए भी एक साथ एकत्रित हुए।

दिवाली के अवसर पर जहां तथागत परिसर लाइटों और मिट्टी के दीयों से जगमगा उठा, तो वहीं क्रिसमस के मौके पर सबको सजावट के लिए अपनी रचनात्मकता दिखाने का मौका मिला और होली ने तो सभी को विविध रंगों से सराबोर कर दिया। हर अवसर पर भोज कक्ष में खास पकवानों का आयोजन भी किया गया था।

25 नवंबर 2014 को तथागत परिसर हॉल में स्थापना दिवस का आयोजन किया गया

विश्वविद्यालय समुदाय ने 25 नवंबर को राजगीर में नालंदा विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस मनाया।

25 नवंबर 2010 को ही नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम (2010) प्रकाश में आया था, जिसे विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस के रूप में मनाया गया।

शुरुआती बैच ने फैकल्टी और स्टाफ के सदस्यों के साथ इस खास दिन को मनाया। इस दिन सदस्यों ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें छात्रों और स्टाफ सदस्यों ने भी प्रदर्शन किया। इसके बाद भोज का आयोजन था, जिसमें स्थानीय प्रशासकों के अलावा वहां आमंत्रित अतिथियों ने भी भाग लिया।

घड़ी की सूई की दिशा में ऊपर से

स्थापना दिवस पर प्रदर्शन करते फैकल्टी सदस्य

डीन अकादमिक योजना डॉ. अंजना शर्मा और उप–कुलाधिपति डॉ. गोपा सभरवाल स्थापना दिवस पर अतिथियों का स्वागत करते हुए

नालंदा शुरुआती ग्रुप स्थापना दिवस पर

तथागत आवासीय परिसर में विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर नालंदा का शुरुआती बैच

नालंदा विश्वविद्यालय समुदाय स्थापना दिवस मनाने के बाद

राजगीर अंतरिम परिसर में गणतंत्र दिवस समारोह

26 जनवरी 2015 को राजगीर के अंतरिम परिसर में भारतीय गणतंत्र दिवस मनाया गया। इस दिन की तैयारी में विश्वविद्यालय ने नई परंपरा स्थापित करते हुए छात्रों से ध्वजारोहण करवाने का फैसला किया।

सभी भारतीय संगठनों में ये स्थापित मानदंड है कि स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के मौके पर संस्थान के प्रमुख द्वारा ही ध्वजारोहण किया जाएगा। भारत भर के विश्वविद्यालयों में ये काम सामान्यतः उपकुलाधिपति या रजिस्ट्रार से करवाया जाता है।

लेकिन नालंदा में ध्वजारोहण का अवसर छात्रों को प्रदान किया गया।

काफी मशक्कत के बाद ध्वजारोहण के लिए एक छात्र और एक छात्रा का चुनाव किया गया। चूंकि नालंदा विश्वविद्यालय एक अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय है, तो यह तय किया गया कि गैर–भारतीय छात्र भी ध्वजारोहण की प्रतिस्पर्द्धा में भाग लेंगे और फिर वे भी ध्वजारोहण का सम्मान हासिल कर सकते हैं।

रणजीत राज और चांदनी गोयल को गणतंत्र दिवस के अवसर पर तिरंगे को फहराने का सम्मान प्राप्त हुआ।

इस संदर्भ हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि किसी भी देश का भविष्य उसके युवाओं के हाथ में ही होता है, और विश्वविद्यालयों को इसकी तैयारी पहले से ही शुरू कर देनी चाहिए। विश्वविद्यालय के दृष्टिकोण वक्तव्य में भी यही कहा गया है: ''तीसरी सहस्राब्दी के विश्वविद्यालय को अपने दृष्टिकोण में भी उदार होना चाहिए। विचारों के लिए खुली सोच, सार्वभौमिक अभ्यास और सभी की समृद्धि और शांति के प्रतिबद्ध होना चाहिए।''

एनयू में खेल गतिविधियां

विश्वविद्यालय समुदाय ने फरवरी में एक बेडमिंटन टूर्नामेंट और एक क्रिकेट टूर्नामेंट भी आयोजित किया।

नालंदा विश्वविद्यालय में बेडमिंटन टूर्नामेंट, फरवरी 2015

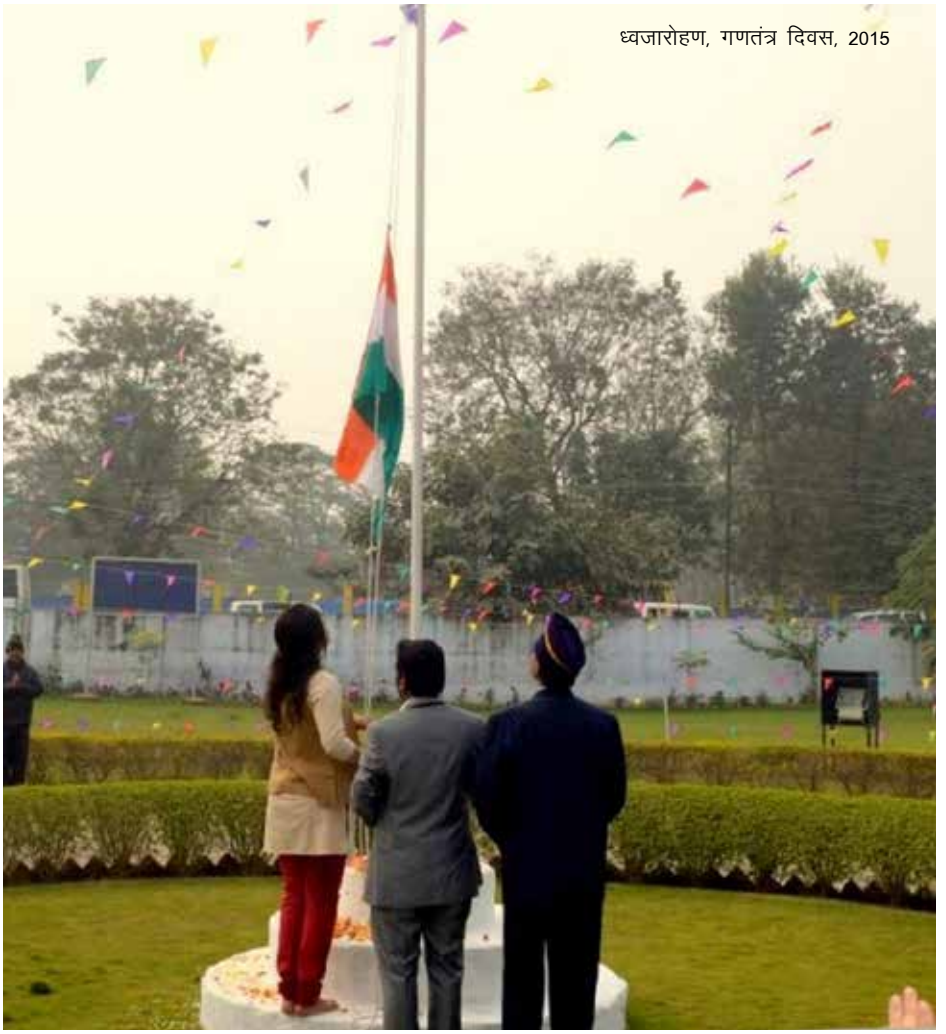

ध्वजारोहण, गणतंत्र दिवस, 2015

नालंदा विश्वविद्यालय परिसर में 2014–15 में आए मुख्य अतिथि

डॉ. गौरव बंसल, राजनीतिक आर्थिक मामलों के राजदूत, यूएस कॉन्स्यूलेट कोलकाता

रिशशो यूनिवर्सिटी जापान से छात्र और संकाय

श्रीमती सुषमा स्वराज, माननीय विदेश मंत्री, भारत सरकार

श्री जीतन राम मांझी, माननीय मुख्यमंत्री, बिहार

एच.ई. श्री लिम थुआन कुआन, सिंगापुर के उच्चायुक्त

एच.ई. श्री चलित मणित्याकुल, थाईलैंड के राजदूत

एच.ई. श्री बर्नार्ड फिलिप, ऑस्ट्रेलिया के उप उच्चायुक्त

सुश्री सेसिलिया ब्रेनान, प्रथम सचिव, ऑस्ट्रेलियाई उच्चायुक्त

एच.ई. श्री थॉन्गफान्ह स्याक्चफोम, राजदूत, लाओ जनवादी लोकतांत्रिक गणराज्य

एच.ई. श्री गुयेन थान्ह टेन, राजदूत, सोशलिस्ट रिपब्लिक ऑफ वियतनाम

श्रीमती रोजमैरी ई. हिले, डिप्टी कौंसुल जनरल ऑफ द फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी

श्री कारमा सेरिंग नांग्याल, कौंसुल जनरल रॉयल भूटान एम्बेसी, कोलकाता एंड डेलीगेशन

श्री पी.वाई. राजेन्द्र कुमार, डायरेक्टर जनरल, नेशनल लाइब्रेरी, कोलकाता

श्री ललित कुमार भाटी, आर्किटेक्ट ओरोविले, पॉन्डीचेरी

कोपरेटिव ग्रोसर चेन ग्रुप (सीजीसी) जापान से जापानी दल। वे शांतिस्तूप समारोह में भाग लेने आए थे।

श्री ओसामु मोटोजिमा, डायरेक्टर जनरल, इंटरनेशनल फ्यूजन एनर्जी ऑर्गेनाइजेशन, फ्रांस

जपान के सात प्रोफेसरों के समूह के साथः

प्रोफेसर हीरोज हीरोको, सेंसुई यूनिवर्सिटी

प्रोफेसर मासाओ नाइतो, प्रोफेसर अमेरितस, टोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज

प्रोफेसर मित्सुको सुनयामा, स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, सेंसुई यूनिवर्सिटी

प्रोफेसर टकेको लिन्युमा, स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, सेंसुई यूनिवर्सिटी

नालंदा विश्वविद्यालय के दौरे पर जापानी छात्र

उपकुलाधिपति अपने कार्यालय में अतिथियों के साथ

नालंदा विश्वविद्यालय के दौरे पर जापानी छात्र

कोपरेटिव ग्रोसर चेन ग्रुप (सीजीसी) जापान से जापानी दल। अक्टूबर 2014 में विश्वविद्यालय में दौरे के दौरान

रिश्शो यूनिवर्सिटी से अतिथि

परिसरीय निर्माण

हालांकि इस वर्ष का मुख्य फोकस शुरुआती स्कूलों का लॉन्च और विश्वविद्यालय के पहले बैच के छात्रों का स्वागत ही था, लेकिन विश्वविद्यालय अपने स्थायी परिसर के निर्माण के प्रति भी प्रतिबद्ध रही।

नालंदा विश्वविद्यालय ने 2012 में आर्किटेक्चरल डिजाइन प्रतियोगिता का आयोजन किया था ताकि परिसर का मास्टर प्लान और फेज–1 का विकास कार्य आगे बढ़ाया जा सके। विश्वविद्यालय के लिए प्रतियोगिता की पूरी प्रक्रिया जैसे डिजाइन ब्रिफ का लिखना, अंतिम प्रवष्टियों के लिए प्रदर्शनी का आयोजन सब विश्वविद्यालय के व्यवसायिक सलाहकार आर्किटेक्ट श्री ए आर रामानाथन ने संभाला था।

चयन समिति ने प्राप्त हुई 79 प्रविष्टियों में से आठ का चयन कर उन्हें फाइनल राउंड में क्वालिफाई करने के लिए सम्मति दी। इन आठ में से पांच प्रविष्टियां शीर्षस्थ इंटरनेशनल फर्म जैसे फुमीहिको माकी और स्नोहेटा की थीं। एक अंतर्राष्ट्रीय ज्यूरी में चार जाने–माने आर्किटेक्ट और शासकीय बोर्ड के तीन सदस्य थे, जिन्होंने इन आठ प्रविष्टियों को आगे के राउंड के लिए हरी झंडी दिखाई थी। चूंकि विश्वविद्यालय की चाह खुद को 'नेट जीरो' या 'नियर जीरो' रखने की थी, जिससे पर्यावरण को कोई हानि न हो, या नाममात्र को नुकसान पहुंचे, तो संवहनीयता को हर प्रविष्टि में मुख्यता प्रदान की गई थी। इस प्रतियोगिता का विजेता वास्तु शिल्प कंसल्टेंट को चुना गया।

नालंदा विश्वविद्यालय को भविष्य के परिसर के रूप में देखा जाना है, जो सार्वभौमिक शिक्षा और बौद्धिकता का केंद्र बनेगा। इसलिए परिसर के मास्टर प्लान को एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक आदर्श के रूप में देखा जाना है, जो संवहनीयता के लिए स्थानीय समुदाय में अपनी आर्थिक और सामाजिक पहचान बनाएगा। परिसर की जगह मुख्य रूप से कृषि के नजदीक क्षेत्र में होने की वजह से आसपास के जगह का इससे प्रभावित होने की आशंका थी। इसलिए निर्माण के समय संबंधित स्थानीय क्षेत्र को समझते हुए निर्माण स्थल को बंद जजीरे में तब्दील कर दिया जाएगा, जिससे आसपास के गांवों में निर्माण की वजह से कोई नुकसान न हो। इससे छोटे किसानों को भी फायदा होगा।

वास्तुशिल्प कंसल्टेंट के मास्टर प्लान में हर स्तर पर संवहनीयता को मुख्यता प्रदान की गई है, फिर वह चाहे किफायती तरीके से निर्माण सामग्री का तैयार करवाना ही क्यों न हो। उसमें ध्यान रखा गया है कि प्राकृतिक संसाधनों या निर्माण सामग्री पर निर्भरता कम से कम हो। इस योजना के तहत क्षेत्र की कृषि और पर्यावरणीय जरूरतों के हिसाब से वृद्धि और विकास में लचीलेपन को भी प्रधानता दी गई है। परिसर के लिए ऐसी आदर्श योजना को चुनने का उद्देश्य ही विश्वविद्यालय की आत्मा को बरकरार रखना है, जो 800 सालों से पर्यावरणीय नीतियों को सर्वोच्च रखे हुए है क्योंकि ये सादगीपूर्ण, प्रभावशाली और क्षेत्र के अनुकूल हैं।

इस वर्ष विश्वविद्यालय ने प्रतियोगिता के विजेता, वास्तुशिल्प कंसल्टेंट के साथ एक करार पर हस्ताक्षर किए और निर्माण के पहले दौर के डिजाइन को हरी झंडी भी दी। राजगीर में दो दिवसीय वर्कशॉप का भी आयोजन किया गया, जिससे आर्किटेक्ट के सभी विशेषज्ञ बिल्डिंग के मास्टर प्लान से संबंधित सभी पहलुओं को अच्छी तरह से समझ सकें।

परिसर डिजाइन के लिए विश्वविद्यालय ने वास्तुशिल्प कंसल्टेंट के साथ करार पर हस्ताक्षर किए

9 मई 2014 को विश्वविद्यालय ने वास्तुशिल्प कंसल्टेंट (वीएससी) के साथ परिसर डिजाइन के करार पर हस्ताक्षर किए।

वीएससी 2013 में विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित वास्तुशिल्प प्रतियोगिता का विजेता रहा था।

बिल्डिंग एंड वर्क कमिटी और शासकीय बोर्ड की सहमति के बाद ही अनुमोदन को अंतिम रूप दिया जा सका। करार पर हस्ताक्षर के बाद विश्वविद्यालय की टीम ने आर्किटक्ट के विशेषज्ञों से अहमदाबाद में मुलाकात की। ये सब राजगीर में आर्किटेक्ट की दो दिवसीय वर्कशॉप के बाद हुआ था, जहां उनकी वास्तुशिल्प की टीम ने बेहतरीन प्रस्तुति के जरिए प्लान से जुड़ी हर छोटी चीज की जानकारी दी थी।

वास्तु शिल्प कंसल्टेंट परिसर का विस्तृत मास्टर प्लान तैयार करेगा, जिसमें पहले फेज में बनने वाली प्रस्तावित इमारतों का पूरा ब्यौरा होगा। प्लान में प्रवेश और निकास, सड़कें, गलियों और रास्तों, और दूसरी सेवाओं जैसे जल आपूर्ति, बिजली, फोन, इंटरनेट इत्यादि के लिए टॉवर वगैरह का भी ब्यौरा होगा। कूड़े उठाने के केंद्र, जल भंडार के लिए तालाब, हौज, वेट लैंड्स, नहरों इत्यादि की व्यवस्था के साथ सौर ऊर्जा के लिए जरूरी इंतजामों की भी व्यवस्था प्लान के अंतर्गत की जाएगी।

वे परियोजना की ऐसी ब्यौरेवार रिपोर्ट भी तैयार करेंगे जिसमें इससे जुड़े सभी पहलु––वास्तुशिल्पीय, संरचनात्मक, सेवाएं, आंतरिक भाग आदि भी होंगे। वीएससी नालंदा विश्वविद्यालय को उसके संवहनीयता के पथ पर चलने में भी मदद करेगा और एक ऐसा परिसर तैयार करेगा, जो पर्यावरण के बिल्कुल अनुकूल होगा––नेट जीरो एनर्जी, नेट जीरो वाटर, नेट जीरो वेस्ट, नेट जीरो ग्रीनहाउस गैस एमिशन।

घड़ी की सुई के अनुसार दायें से

विश्वविद्यालय अधिकारी वास्तुशिल्प के अहमदाबाद कार्यालय में

विश्वविद्यालय के डिजाइन के लिए वास्तुशिल्प विशेषज्ञों के साथ करार पर हस्ताक्षर

वीएससी, पार्टनर राजीव कठपलिया से परिसर डिजाइन की जानकारी लेते कुलाधिपति अमर्त्य सेन

वीएससी, पार्टनर राजीव कठपलिया मीटिंग से पहले एक मॉडल की व्यवस्था करते हुए

वास्तुशिल्प विशेषज्ञ और विश्वविद्यालय
अधिकारी स्थायी परिसर की साइट पर मिलते हुए

फेज–1 के निर्माण के लिए संशोधित वास्तुशिल्पीय डिजाइन

फेज–1 के निर्माण के लिए वास्तुशिल्पीय डिजाइन में जगह की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए सर्विस सिस्टम को पुनर्गठित और एकीकृत कर कुछ संशोधित किया गया।

विश्वविद्यालय इस बात पर भी दृढ़ था कि दो स्कूलों की शुरुआत की घोषणा के साथ इनकी तैयारी को सर्वोपरि रखना था, जिसके तहत पहले चरण और दूसरे चरण में कुछ फेरबदल किए गए। हालांकि कार्य का समग्र क्षेत्र सीसीईए द्वारा अनुमोदित वही रहा, जिसके लिए पूंजी व्यय निर्धारित किया गया था।

विश्वविद्यालय के फेज–1 के निर्माण के लिए मास्टर प्लान को स्थानीय सरकार से अनुमोदन भी मिल गया है। एनवायरमेंटल इम्पैक्ट एसेसमेंट (ईआईए) से सम्मति मिलना भी जरूरी है और निर्माण से पहले ही उसके लिए भी अर्जी दे दी गई है।

फेज–1 के निर्माण में निम्न को पूरा किया जाएगाः

- स्कूल ऑफ इकोलोजी एंड एनवायरमेंटल स्टडीज
- स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज
- आउटरीच सेंटर
- लाइब्रेरी
- स्टूडेंट रेजिडेंस हॉल
- संकाय और स्टाफ के आवास
- प्रशासनिक इमारत
- इंटरनेशनल सेंटर
- कैंपस इन
- इंटीग्रेटेड स्कूल एंड क्रेच

दो दिवसीय वर्कशॉप के दौरान वीएससी पार्टनर, श्री राजीव कठपलिया मुख्य परिसर क्षेत्र में दूसरे भागीदारों से बात करते हुए। 17 जून 2014

दो दिवसीय वर्कशॉप में शामिल सदस्य। 17 जून 2014

वित्त प्रबंधन

विश्वविद्यालय सुनिश्चित करता है कि इसे मिलने वाले समस्त फंड का इस्तेमाल पारदर्शिता से विश्वविद्यालय के लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए ही किया जाएगा।

फंड का इस्तेमाल करते हुए अधिनियम, संविधि और वित्त नियमन में दिए गए सभी प्रावधानों का पूरे उत्साह से पालन किया जाता है।

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा निर्धारित फॉरमेट के अनुसार ही विश्वविद्यालय का वार्षिक लेखा संभूति लेखा प्रणाली के जरिए किया जाता है। भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक को प्रमाणीकरण के लिए दिए जाने से पहले ये खाते वित्त समिति और शासकीय बोर्ड को भेजे जाते हैं।

विश्वविद्यालय के वार्षिक लेखे का लेखा परीक्षण भारत के सीएजी ऑफिस, नई दिल्ली द्वारा किया जाता है। विश्वविद्यालय के काम राजगीर में शुरू होने की वजह से विश्वविद्यालय के ऑडिट का काम अब प्रिंसीपल डायरेक्टर ऑडिट (सेंट्रल), लखनऊ को सौंपा गया है, जिनकी एक शाखा पटना में भी है। ऑडिट सर्टिफिकेट के साथ लेखा परीक्षण किए हुए खाते संसद के दोनों सदनों में प्रस्तुत होते हैं।

विश्वविद्यालय की वित्तीय स्थिति का विवरण नीचे दिया गया है:

वार्षिक लेखा 2014-15 का सार

प्राप्ति

प्रारंभिक शेष	:	721.04 लाख
एमईए से प्राप्त अनुदान	:	1700.00 लाख
अन्य प्राप्तियां	:	87.62 लाख
कुल	**:**	**2508.66 लाख**

व्यय

पूंजी व्यय	:	796.27 लाख
आवर्ती व्यय	:	1172.71 लाख
जमा और अग्रिम	:	127.12 लाख
अंतिम शेष	:	412.56 लाख
कुल	**:**	**2508.66 लाख**

नालंदा टीम

शासकीय बोर्ड के सदस्य

विश्वविद्यालय की नीतियों और प्रबंधन की सारी जिम्मेदारी शासकीय बोर्ड की है।

प्रोफेसर अमर्त्य सेन नालंदा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और विश्वविद्यालय के शासकीय बोर्ड के प्रमुख हैं। प्रोफेसर सेन लेमंट यूनिवर्सिटी में पढ़ाते हैं, और हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में भी अर्थशास्त्र और दर्शन के प्रोफेसर हैं। इससे पहले वह ट्रिनिटी कॉलेज, कैम्ब्रिज में कार्यरत थे।

उनके शोध के विस्तृत दायरे में अर्थशास्त्र, दर्शन और निर्णय सिद्धांत, सामाजिक सिद्धांत, अर्थशास्त्र कल्याण, जन स्वास्थ्य, लिंग अध्ययन, नैतिक और राजनीतिक दर्शन और शांति व युद्ध का अर्थशास्त्र शामिल है। आपको भारत रत्न और अर्थशास्त्र में नोबेल प्राइज से नवाजा जा जुका है।

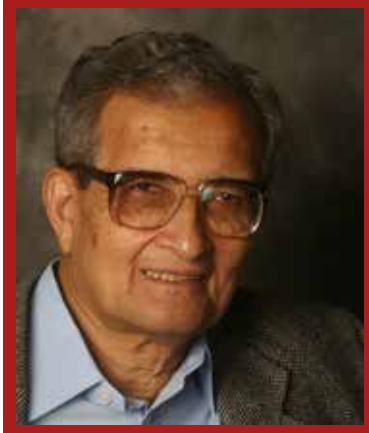

श्री जॉर्ज येओ नालंदा विश्वविद्यालय के शासकीय बोर्ड के अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार पैनल के प्रमुख हैं। आपको 2012 में भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण सम्मान से नवाज़ा गया। आप वर्ल्ड इकोनोमिक फोरम, निकोलय बर्गग्रुएन इंस्टीट्यूट'स 21वीं सेंचुरी और हार्वर्ड बिजनेस स्कूल के अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार बोर्ड और आईईएसई बिजनेस स्कूल के सदस्य भी हैं। इससे पूर्व आप 23 सालों तक सिंगापुर सरकार के साथ सूचना और कला मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, व्यापार और उद्योग मंत्री और विदेश मंत्री के तौर पर काम कर रहे थे।

श्री एन.के. सिंह बिहार से राज्यसभा सदस्य हैं। आप भारत सरकार में नौकरशाह रह चुके हैं, और भारत के व्यय और राजस्व सचिव का महत्वपूर्ण पद संभालते थे। आप प्रधानमंत्री के सचिव, राष्ट्रीय योजना आयोग के सदस्य और बिहार स्टेट प्लानिंग बोर्ड के उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं। आपने सुधार के राजनीति अर्थशास्त्र और राजनीतिक गठबंधनों की वास्तविकता पर कई किताबें और लेख लिखे हैं।

प्रोफेसर लॉर्ड मेघनाद सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ ग्लोबल गवर्नंस से अवकाश प्राप्त प्रोफेसर हैं। आपने इसकी स्थापना 1992 में लंदन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स (एलएसई) में की थी। आप अप्रैल 1991 में, वेस्टमिंस्टर शहर के सेंट क्लेमेंट डेन में बैरन (इंग्लैंड में सबसे नीचे दर्जे के लॉर्ड) भी बने। लॉर्ड देसाई 1990 में एलएसई में ड्वलपमेंट स्टडीज इंस्टीट्यूट के संस्थापक भी रहे। आप सालों से अर्थमितिय, समष्टि अर्थशास्त्र, मार्क्सवादी अर्थशास्त्र और विकास अर्थशास्त्र पढ़ाते रहे हैं।

प्रोफेसर प्रपॉड असवविरुन्हकर्ण पचुलालोंग्कोर्ण यूनिवर्सिटी, बैंकाक में आर्ट्स फैकल्टी के अध्यक्ष हैं। आप चुलालोंग्कोर्ण यूनिवर्सिटी में डिपार्टमेंट ऑफ इस्टर्न लैंग्वेज के प्रमुख भी रह चुके हैं। आपने कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी, बर्कले से अपनी पीएचडी बौद्ध अध्ययन में की। आपने पाली–संस्कृत में स्नातक और स्नातकोत्तर चुलालोंग्कोर्ण यूनिवर्सिटी से की। आपके शोध का विषय शब्द व्युत्पत्ति, भाषा और समाज, पाली–संस्कृत साहित्य और धर्म–ग्रंथ संबंधी अध्ययन रहा है।

प्रोफेसर वांग गुन्वु ईस्ट–एशियन इंस्टीट्यूट के अध्यक्ष और नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर में प्रोफेसर हैं। आप ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी से अवकाश प्राप्त प्रोफेसर, एनयूएस में ली कुआं येव स्कूल ऑफ पब्लिक पोलिसी के अध्यक्ष, चाइनीज हैरिटेज सेंटर के उपाध्यक्ष और नानयांग टेक्नोलोजिकल यूनिवर्सिटी में इंस्टीट्यूट ऑफ स्ट्रेटेजिक एंड डिफेंस स्टडीज के बोर्ड मेम्बर हैं। प्रोफेसर वांग ब्रिटिश अम्पायर (सीवीई) के कमांडर भी हैं। आप 1986 से 1995 तक हॉन्ग–कॉन्ग यूनिवर्सिटी के उप–कुलाधिपति भी रह चुके हैं।

प्रोफेसर सुसुमु नाकानिशी नारा प्रीफेक्चर कॉम्प्लेक्स के निदेशक और जैपनीज स्टडीज के इंटरनेशनल रिसर्च सेंटर में अवैतनिक प्रोफेसर हैं। आपके शोध का विषय जापानी संस्कृति में साहित्य और तुलनात्मक प्राचीन साहित्य है। आप शिन्तोइस्म, कोजिकी, निहोन शोकी और दूसरे जापानी साहित्य में सम्मानित विद्वान हैं। आपने प्राचीन जापानी लेखन पर अनेक किताबें लिखी हैं।

प्रोफेसर सुगाता बोस हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में इतिहास के गार्डिनर प्रोफेसर हैं। उपनिवेश और उपनिवेश पश्चात राजनीतिक अर्थशास्त्र, ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में संबंध, यात्रा के अंतर–प्रांतीय कार्यक्षेत्र, समस्त भारत में व्यापार और संभावनाएं, भारतीय नैतिक उपदेश, राजनीतिक दर्शन और आर्थिक विचार आपकी स्कॉलरशिप के मुख्य विषय रहे हैं। आपने अंग्रेजी में अनुवाद कार्य किया है और टैगोर के गीतों की रिकॉर्डिंग को भी पब्लिश कराया है। आपको 1997 में गुग्गेन्हेइम फैलोशिप भी प्राप्त हुई।

प्रोफेसर वांग बंग्वेई पेकिंग यूनिवर्सिटी के इंस्टीट्यूट ऑफ ओरियंटल स्टडीज और ओरियंटल लिटरेचर रिसर्च सेंटर में निदेशक और प्रोफेसर हैं। आप पेकिंग यूनिवर्सिटी में इंडिया रिसर्च सेंटर के भी निदेशक हैं। आपकी शोध के विषय हैं: बौद्धिक साहित्य का अध्ययन, बौद्ध धर्म का इतिहास, चीन–भारत का सांस्कृतिक परस्पर प्रभाव खासकर बौद्ध संदर्भ में।

डॉ. तानसेन सेन न्यूयॉर्क की सिटी यूनिवर्सिटी के बरूच कॉलेज में एशियन हिस्ट्री और रिलिजियन पढ़ाते हैं। आप नालंदा–श्रीविजया सेंटर, इंस्टीट्यूट ऑफ साउथईस्ट एशियन स्टडीज, सिंगापुर में भी पढ़ाने के लिए जाते हैं। आप एक विशेष लेख पर काम कर रहे हैं, जिसका उद्देश्य 14वीं और 15वीं शताब्दी में मध्य एशिया में होने वाले सांस्कृतिक आदान–प्रदान पर नजर डालना है। इसके अतिरिक्त आप दक्षिण–अमेरिकी सिल्क रोड पर एक सहयोगपूर्ण प्रोजेक्ट, और भारत में चीनी समुदाय के इतिहास और अनुभवों पर एक वेबसाईट के निर्माण में भी व्यस्त हैं।

श्री अनिल वाधवा ने 6 जनवरी 2014 को, श्री अशोक के. कांथा के बीजिंग में भारत के राजदूत बनकर जाने के बाद, विदेश मंत्रालय में सचिव (पूर्व) का पद ग्रहण किया। इससे पूर्व श्री वाधवा थाईलैंड में भारत के राजदूत थे। आप पोलैंड में भारतीय राजदूत और ओमान में प्रोविजनल टेक्निकल सचिवालय में निदेशक/संयुक्त सचिव और बाद में हेग में भी तकनीकी सचिव की भूमिका निभा चुके हैं। धाराप्रवाह अंग्रेजी, हिंदी और चीनी भाषा बोलने वाले वाधवा चीनी इतिहास और मध्यकालीन भारत के इतिहास और आर्किटेक्चर में स्नातकोत्तर हैं। आपने 1979 में भारतीय विदेश सेवा में काम करना शुरू किया।

डॉ. गोपा सभरवाल नालंदा विश्वविद्यालय की उप–कुलाधिपति हैं। नालंदा आने से पूर्व आपने भारत के सर्वप्रथम लिबरल आर्ट्स कॉलेज, लेडी श्रीराम कॉलेज (महिला) में, 1993 में डिपार्टमेंट ऑफ सोशियोलोजी की स्थापना की थी। अगले दो दशकों में इस डिपार्टमेंट का काम बेहद उल्लेखनीय रहा, इसमें ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, सिंगापुर और जापान जैसे देशों के कई छात्र आए और यहां के कई छात्र इन देशों में गए। आपके शोध के विषयों में शहरी भारत में जातीय समूह, मानव शास्त्र और समाज इतिहास शामिल हैं। इन विषयों पर आपकी किताबें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से जातीय समूह, कर्नाटक राज्य के बेलगाम में जातीयता पर शोध कर समाज शास्त्र में पीएचडी प्राप्त की।

समिति

अकादमिक परिषद

उप–कुलाधिपति, नालंदा विश्वविद्यालयः अध्यक्ष

डीन (अकादमिक योजना), नालंदा विश्वविद्यालयः सदस्य

डीन ऑफ स्कूल, नालंदा विश्वविद्यालयः सदस्य (एस)

प्रत्येक स्कूल से दो प्राध्यापक, नालंदा विश्वविद्यालयः सदस्य

रजिस्ट्रार, नालंदा विश्वविद्यालयः सदस्य सचिव

लाइब्रेरियन, नालंदा विश्वविद्यालयः सदस्य

छात्र मामलों के डीन, नालंदा विश्वविद्यालयः सदस्य

एक विशेषज्ञ या गुणीः सदस्य

अकादमिक क्षेत्र से दो प्रमुख शोधार्थिः सदस्य

वित्त समिति

उप–कुलाधिपति, नालंदा विश्वविद्यालयः अध्यक्ष

विदेश मंत्रालय से नामांकितः सदस्य

वित्त मंत्रालय से नामांकितः सदस्य

नालंदा विश्वविद्यालय से स्कूल ऑफ स्टडी से एक डीन, बारी–बारी से उप–कुलाधिपति द्वारा नामांकितः सदस्य

सुश्री जानकी कठपलिया कोशाध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालयः सदस्य

सुश्री दीपाली खन्ना सदस्य सचिव, आईजीएनसीएः सदस्य

वित्त अधिकारी, नालंदा विश्वविद्यालयः सदस्य सचिव

निर्माण व कार्य समिति

उप–कुलाधिपति, नालंदा विश्वविद्यालयः अध्यक्ष

डीन (अकादमिक योजना), नालंदा विश्वविद्यालयः सदस्य

एएस व एफए, एमईएः सदस्य

जेएस (दक्षिण), एमईएः सदस्य

श्री सुधीर कुमार, चीफ प्रोजेक्ट मैनेजर, आईआईटी पटनाः सदस्य

श्री ए.के. सिन्हा, भूतपूर्व एडीजी, सीपीडब्ल्युडीः सदस्य

श्री ए.आर. रामनाथन, सलाहकार, नालंदा विश्वविद्यालयः सदस्य

नालंदा विश्वविद्यालय संकाय सदस्य

संक्षिप्त परिचय, कुछ बड़े प्रकाशनों, शोध परियोजनाओं, सम्मेलनों में भागीदारी, फेलोशिप और दूसरी उपलब्धियां, 2014–15 संकाय की।

स्कूल ऑफ इकोलोजी एंड एनवायरमेंट स्टडीज

1. मिहिर देब, प्रोफेसर (विजिटिंग), कार्यकारी डीन

मिहिर देब लगभग पांच दशकों से गैर–नवीकरणीय प्राकृतिक संसाधनों, उनकी रचना की परिस्थिति और संवहनीयता का सार पर शोध कर रहे हैं। उनके हालिया अध्ययनों में स्वर्ण खदानों की कारीगरी और भारत में मरकरी प्रदूषण, भू–रसायन, दिल्ली के सीमाक्षेत्र में भूमिगत जल का स्तर शामिल है। बहुत से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जरनल में उनके 100 से अधिक विज्ञान संबंधी लेख प्रकाशित हो चुके हैं और वह तीन विज्ञान संबंधी ग्रंथों का संपादन भी कर चुके हैं।

जाधवपुर विश्वविद्यालय से भूविज्ञान में पीएचडी के बाद उन्होंने न्यूयॉर्क की सिटी यूनिवर्सिटी से पोस्ट–डॉक्टोरल रिसर्च की। वह जर्मनी और यूके की यूनिवर्सिटी में भी अध्ययन कर चुके हैं। वह 1970 से 2010 के दिल्ली विश्वविद्यालय के जियोलॉजी डिपार्टमेंट में संकाय सदस्य और संकाय प्रमुख भी रहे हैं। 2004 से 2009 के बीच वह दिल्ली विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ एनवायरमेंटल स्टडीज के डायरेक्टर थे।

आपको 1976 में कलकत्ता में एशियाटिक सोसाइटी से निर्मल नाथ चैटर्जी मैडल, 1996 में नेशनल मिनरल अवॉर्ड (भारत सरकार), 2013 में इंडियन जियोफिजिकल यूनियन से गोल्ड मैडल प्राप्त हुआ। वह इंडियन नेशनल साइंस एकेडमी और यूएसए की सोसाइटी ऑफ इकोनॉमिक जियोलॉजिस्ट से भी जुड़े हैं।

2. एस. निगोल सिओ, प्रोफेसर

निगोल सिओ एक प्राकृतिक संसाधन अर्थशास्त्री हैं, जिनकी विशेषज्ञता ग्लोबल वार्मिंग का अध्ययन है। साउथ कोरिया में पैदा हुए निगोल ने सीओल यूनिवर्सिटी, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया बर्कले से पढ़ाई की और येल यूनिवर्सिटी से पीएचडी डिग्री ली।

2003 तक वह वर्ल्ड बैंक के साथ अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और एशिया में विविध जलवायु परिवर्तन परियोजनाओं पर काम करते रहे। आपने विविध जरनल में 40 से अधिक लेख और जलवायु परिवर्तन पर दो किताबें लिखी हैं। 2011 में आपको यूएस से ग्लोबल वार्मिंग पर आउटस्टेंडिंग एप्लाइड इकोनॉमिक पर्सपेक्टिव एंड पॉलिसी आर्टिकल अवॉर्ड मिला।

लगभग 30 अंतर्राष्ट्रीय जरनल में वह संपादकीय बोर्ड में, और ग्लोबल वार्मिंग पर बहुत सी राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के सलाहकार रह चुके हैं। 2006 तक वह यूके, स्पेन और ऑस्ट्रेलिया में फैकल्टी सदस्य रहे हैं।

3. सोमनाथ बंदोपाध्याय, एसोसिएट प्रोफेसर

सोमनाथ बंदोपाध्याय एनवायरमेंटल साइंस में पीएचडी (जेएनयू, नई दिल्ली) हैं और एनवायरमेंटल इकोनॉमिक्स और नीति विश्लेषण में हार्वर्ड, यूएसए से प्रशिक्षित हैं।

डॉ. बंदोपाध्याय प्राकृतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। वह जटिल मसलों के समाधान के लिए सरकार नीतियों और कार्यक्रमों, समुदाय संस्थानों और मार्केट आधारित संसाधनों को इस्तेमाल करते हैं। आपका फोकस जल से संबंधित अंतर्विषयक शोध पर है।

आप दो दशकों से अधिक से गुजरात में पर्यावरणीय नीतियों पर शुरुआती काम, बिहार में सामाजिक विकास प्रोग्राम पर काम कर चुके हैं। आपने गुजरात इकोलोजी कमीशन और आगा खान फाउंडेशन में विभिन्न वरिष्ठ पदों पर काम करते हुए आठ–आठ साल बिताए हैं।

वर्तमान में आपका फोकस जल प्रबंधन और उसे पुनः इस्तेमाल योग्य बनाने पर है।

2014–15 में अकादमिक उपलब्धियां

'फूड एज कंटीन्यूइटी' पर वंदना शिवा द्वारा दिए व्याख्यान लीला प्रिज्म की अध्यक्षता, इंडिया हैबिटेट सेंटर, अगस्त 2014

दिल्ली में उच्च अधिकारियों के लिए आयोजित ट्रेनिंग प्रोग्राम की अध्यक्षता, दिसंबर 2014

बाढ़ और विनाश पर ऑनलाइन संवाद (http://www.lilainteractions.in/dividing-waters/)।

टीईआरआई द्वारा आयोजित वार्षिक समारोह में यूएनडीपी द्वारा आमंत्रित पैनल ''टेक्नॉलोजीस फॉर कम्यूनिटीजः इम्प्रूविंग ग्राउंडवाटर मैनेजमेंट इन इंडिया'', विषय पर, दिल्ली सस्टेनेबल डवलपमेंट समिट (डीएसडीएस) के भाग के रूप में। 4–6 फरवरी 2015

4. प्रभाकर शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर

राजेन्द्र एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, खड़गपुर से कृषि और कृषि इंजीनियरिंग में टेक्नीकल डिग्री के बाद प्रभाकर शर्मा ने जर्मनी की स्टूटगार्ट यूनिवर्सिटी से वाटर रिसोर्सेस इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट में मास्टर डिग्री ली। आपने वॉशिंग्टन स्टेट यूनिवर्सिटी से डॉक्टोरल डिग्री ली।

डॉ. शर्मा ने स्वीडन की उप्पसला यूनिवर्सिटी (स्वीडन) में काम करने से पहले डेनमार्क और कैनेडा की यूनिवर्सिटी में कार्य किया, जहां आपने नैनो–साइज दूषणकारी तत्वों और उपसतह प्रणाली से वहन की गई कार्बनडाईऑक्साइड गैस पर खोज की। आपकी शोध कृषि और इंडस्ट्री से निष्कासित पानी को फिर से इस्तेमाल करने पर आधारित है। इसके लिए उन्होंने लैब और फील्ड में गहन शोध की है और इससे संबंधित गहन जानकारी लिए बीस से ज्यादा शोध लेख लिखे हैं।

2014–15 में अकादमिक उपलब्धियां

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शोध और अध्ययन दौरेः

स्वीडन की उप्पसला यूनिवर्सिटी में शोध सहकार्य मिट्टी और भूमिगत जल में नैनोमैटिरियल संवहन के क्षेत्र में (24 जनवरी से 31 जनवरी 2015)।

अंतर्राष्ट्रीय जरनल में छपे लेखः

शर्मा, पी. और फेगरलेंड 2015। 'ट्रांसपोर्ट ऑफ सरफेस–मॉडीफाइड कार्बन नेनोट्यूब्स थ्रू ए सॉइल कॉलम'। जे. विजुअलाइजेशन एक्सपेरिमेंट्स, 98, डीओआईः10.3791/52634। वीडियो पेपर लिंकः http://www.jove.com/video/52634/]

शर्मा, पी., जी. गोयल, एस.एम. अषेकुज्जमन, जी. सैनी और आर. सिंह. 2014। 'ग्राउंडवाटर आर्सेनिक इन साउथ–ईस्ट एशियाः एक्सटेंट, इफेक्ट्स एंड सोल्युशन' एशियन जरनल ऑफ वाटर, एनवायरमेंट एंड पॉल्युशन, 11:1–11

शर्मा, पी., डी. बाउ और एफ. फेगरलेंड 2014। 'डिपोजिशन एंड मोबिलिजेशन ऑफ फंक्शनलाइज मल्टीवॉल कार्बन नेनोट्यूब्स अंडर वेरिंग पोरोस मीडिया साइज्स एंड सोल्युशन केमिस्ट्री'। एनवायरन। अर्थ साइंस, 72:3025–3035

कोकुर, सी., ए. चौधरी, एन. सकुलचैचारोन, एच. बोपाराई, के.वेबर, पी. शर्मा, एम. क्रोल, एल. ऑस्ट्रींस, सी. पीस, बी.स्लीप, डी.एम. ओ'कैरोल। 2014। 'कैरेक्टराइजेशन ऑफ एनजेडवीआई मोबिलिटी इन ए फील्ड स्केल टेस्ट', एनवायरन. साइंस. टेक्नॉल., 48:2862–2869

मेकोनन, ए., पी. शर्मा, और एफ. फेगरलेंड, 2014। 'ट्रांसपोर्ट एंड मोबिलाइजेशन ऑफ मल्टीवॉल कार्बन नेनोट्यूब्स इन क्वार्ट्ज सेंड अंडर वेराइंग सेचुरेशन' एनवायरन. अर्थ. साइंस., 71:3751–3760

विशेषज्ञ समीक्षित किताबों में प्रकाशितः

शर्मा, पी., सी.एफ. त्सांग, सी. डफटी, ए.निएमी, और जे. बेंसाबत. 2015। 'फिसीब्लिटी ऑफ लॉन्ग–टर्म मोनिटरिंग ऑफ डीप हाइड्रोलोजी विद फ्लोइंग फ्लूड इलेक्ट्रिक कंडक्टिविटी लॉगिंग मेथड। डायनामिक्स ऑफ फ्लूड एंड ट्रांसपोर्ट इन फ्रेक्चर्ड–पोरोस मीडिया', जिओफिजिकल मोनोग्राफ 210, संपादन बी. फेबिशेन्को, जे. गेल, और एस. बेंसन, जॉन विले एंड संस, निगमित 53–62, आईएसबीएनः 978–1–118–87720–3

सम्मेलन में प्रस्तुतिः

बसरत, एफ., एच. पेरूड, जे.लॉफी, एन. डेनचिक, जी. लॉड्स, एफ. फेगरलेंड, पी.शर्मा, पी. पेजर्ड और ए. निएमी, 2015। 'वाइबिलिटी ऑफ मॉडलिंग गैस ट्रांसपोर्ट इन शैलो इंजेक्शन–मोनिटरिंग एक्सपेरिमेंट फील्ड' फ्रांस में। ईजीयू जनरल एसेंबली, विएना, ऑस्ट्रिया, ERE5.2, EGU 2015–15224 (पोस्टर प्रस्तुति)।

फेगरलेंड, एफ, एम. हेदायति, पी. शर्मा और डी. कत्याल, 2015। 'ट्रांसपोर्ट ऑफ कार्बन बेस्ड नेनोपार्टिकल्स इन सेचुरेटेड पोरोस मीडिया'। ईजीयू जनरल एसेंबली, विएना, ऑस्ट्रिया, HS8.1.6, EGU 2015–10731 (पोस्टर प्रस्तुति)।

त्सांग, सी.एफ, जे.ई. रोजबर्ग, पी. शर्मा, ए निएमी और सी. जुलिन, 2015। 'हाइड्रोजियोलोजिक टेस्टिंग ड्यूरिंग ड्रिलिंग ऑफ सीओएससी–1 बोरहोलः एप्लीकेशन ऑफ एफएफईसी लॉगिंग मेथड।' ईजीयू जनरल एसेंबली, विएना, ऑस्ट्रिया।

आईवरफेल्ट, यू, पी. शर्मा, और एफ. फेगरलेंड 2014। 'फेट एंड ट्रांसपोर्ट आफ फायरबोर्न पार्टिकल्स इन सबसर्फेस सिस्टम्स।' ईजीयू जनरल एसेंबली, विएना, ऑस्ट्रिया।

बसरत, एफ., पी. शर्मा, ए. निएमी और एफ. फेगरलेंड, 2014। 'एक्सपेरिमेंटल स्टडी ऑफ एडवेक्टिव–डिफ्यूसिव गैसुअस सीओटू ट्रांसपोर्ट थ्रू पोरोस मीडिया।' ईजीयू जनरल एसेंबली, विएना, ऑस्ट्रिया।

5. अर्ने हार्म्स, असिस्टेंट प्रोफेसर

अर्ने हार्म्स एक सामाजिक मानवविज्ञानी हैं, जिनकी विशेषज्ञता पर्यावरणीय संबंध, वैश्विक तंग हालात और परिवर्तनीयता है। वह बर्लिन में प्रशिक्षित हुए, जहां उन्होंने आपदा, विस्थापन और गंगा डेल्टा पर अध्ययन में पीएचडी (2014 में) की। इससे पहले वह कैरिबियाई हिंदुओं में परंपरा और लिंग पर शोध कर चुके हैं।

उन्होंने बहुत से लेख और समीक्षाएं लिखी हैं और गैर–अकादमिक लेखन के माध्यम से जन संवाद में भी भाग लिया है। वह बर्लिन, कोलोन और म्यूनिच में पार्ट टाइम लैक्चरार भी रहे हैं।

2014–15 में अकादमिक उपलब्धियां

शोध

शहरी वातावरण पर एक शोध प्रोजेक्ट के सिलसिले में मुंबई दौरा। फरवरी 2015।

प्रकाशन

विद्वत समीक्षा प्रकाशन

हार्म्स, अर्ने। 2015। 'लीविंग लोहाचराः ऑन सर्किट्स ऑफ डिसप्लेस्मेंट एंड एम्प्लेस्मेंट इन द इंडियन गंगास डेल्टा।' ग्लोबल एनवायरमेंट 8 (1): 62–85

वर्किंग पेपर्स

हार्म्स, अर्ने। 2015। 'ऑफ द ग्रिडः एनवायरमेंटल डिग्रेडेशन एंड सिटीजनशिप एट द मार्जिंस।' इन क्रॉसरोड्स एशिया वर्किंग पेपर सीरिज, नं. 27. वर्किंग पेपर्स इन सोशल एंड कल्चरल एनथ्रॉपोलोजी (एलएमयू म्यूनिच) में साथ–साथ प्रकाशित, नं. 15

प्रसिद्ध विज्ञान संबंधी/अन्य प्रकाशन

हार्म्स, अर्ने और ओलिवर पाउला 2014। 'डाई इंडीशे क्लीम्बेवागुंग इम स्पागत'। पॉलिटिशे ओकोलोजी, नं. 139:73–75

विज्ञान संबंधी समीक्षा

हार्म्स, अर्ने। 2014। 'डाई क्लिमफालेः डाई गेफ्रलीशे नाहे वोन पोलितिक उंद क्लिमफॉर्सचुंग', हेंस वॉन स्टॉर्च और वर्नर क्रॉब द्वारा। एएजी रिव्यु ऑफ बुक्स 2 (4): 150–52

वार्ताएं

'डाई अंडर गंगा' प्रस्तुति एशियन–ओरियंट–इंस्टीट्यूट, ज्यूरिक यूनिवर्सिटी 2014।

स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज

1. आदित्य मलिक, प्रोफेसर और डीन

दर्शन, पुरातत्व, इतिहास, सामजिक विज्ञान और धार्मिक अध्ययन में प्रशिक्षित आदित्य मलिक ने सेंट स्टीफंस कॉलेज (दिल्ली,) डेक्कन कॉलेज (पुणे) और साउथ एशिया इंस्टीट्यूट ऑफ द यूनिवर्सिटी (जर्मनी) से पढ़ाई की। जर्मनी विश्वविद्यालय से ही इन्होंने पीएचडी की डिग्री ली। आप जर्मन रिसर्च काउंसिल (हेज्बर्ग) में सीनियर फैलो; हीब्रू यूनिवर्सिटी (येरूशलम) में अतिथि संकाय; दिल्ली यूनिवर्सिटी, क्लस्टर इनोवेटिव सेंटर में अतिथि प्रोफेसर; मैक्स–वेबर–सेंटर फॉर एंडवांस्ड सोशल साइंस रिसर्च, जर्मनी में फैलो; न्यूजीलैंड साउथ एशिया सेंटर (एनजेडएसएसी) में उप निदेशक; न्यूजीलैंड इंडिया रिसर्च इंस्टीट्यूट (एनजेडआईआरआई) में सहायक निदेशक; और यूनिवर्सिटी ऑफ केंटरबरी में रिलिजियस स्टडीज के प्रमुख हैं। आपका शोध कार्य और प्रकाशन, जिसमें आपकी कई किताबें, संपादित खंड, लेख और किताबों में लिखे अध्याय शामिल हैं, वे सब तीर्थयात्रियों, वाचिक परंपरा, रिवाज और प्रदर्शन, धर्म, कानून और न्याय, और दक्षिण एशिया के मध्य और समकालीन इतिहास पर आधारित हैं।

2014–15 में अकादमिक गतिविधियां

प्रकाशनः

किताब की पांडुलिपि का समापन (लगभग 100,00 शब्द), शीर्षकः 'टेल्स ऑफ जस्टिस एंड रिचुअल्स ऑफ एम्बॉडिडमेंट. ऑरल नैरेटिव्स फ्रॉम द सेंट्रल हिमाल्यास'। ओयूपी (न्यूयॉर्क)। वर्तमान में ओयूपी के साथ प्रोडक्शन में। विमोचन की संभावित तिथिः 1 मई 2016

संपादित खंडों की तैयारी (एंत्जे लिंकनबक, मैक्स–वेबर–सेंटर फॉर एडवांस्ड सोशल रिसर्च, एर्फर्ट के साथ) जॉन रॉल की न्याय की अवधारणा पर अमर्त्य सेन द्वारा की गई आलोचना पर आधारित। संभावित शीर्षकः *'रियलाइजिंग जस्टिस? नॉर्मेटिव्स ऑडर्स एंड ए रियल्टी ऑफ इन(जस्टिस) इन इंडिया।'* दर्शन, धर्म, इतिहास, कानून, समाजशास्त्र और संस्कृत अध्ययन के क्षेत्र में काम करते हुए अंतर्राष्ट्रीय शोधार्थियों (भारत, अमेरिका, यूरोप) द्वारा सोलह बहुर्विषयक योगदान।

सह संपादक (विल स्वीटमैन के साथ) : सेज हैंडबुक ऑफ हिंदुइज्म इन इंडियाः मॉडर्न एंड कंटेम्परारी मूवमेंट्स। (खंड 2) नई दिल्लीः सेज पब्लिकेशंस। विमोचन तिथिः 2016।

किताब से अध्यायः 'इन सेज हैंडबुक ऑफ हिंदुइज्म इन इंडियाः मॉडर्न एंड कंटेम्परारी मूवमेंट्स' में 'फोल्क हिंदुइज्मः द मिडिल ग्राउंड?' नई दिल्लीः सेज पब्लिकेशंस।

2. पंकज मोहन, प्रोफेसर

पंकज मोहन पहले जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में भाषा, पूर्व एशिया का इतिहास और संस्कृति पढ़ते थे और फिर पेकिंग यूनिवर्सिटी, बीजिंग में। वहीं से कोरियाई और जापानी भाषाओं में एम.ए. कोर्स भी पूरा किया। आपने ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी, कैनबरा से पूर्वी एशियाई इतिहास में पीएचडी डिग्री ली। आप (1999–2003) में कोपनहेगन यूनिवर्सिटी, कोरियन स्टडीज एंड एशियन हिस्ट्री (1997–1998, 2002–2009) में लेक्चरार; और यूनिवर्सिटी ऑफ सिडनी के एशियन स्टडीज प्रोग्राम के प्रमुख; और फैकल्टी ऑफ इंटरनेशनल कोरियन स्टडीज, द एकेडमी ऑफ कोरियन स्टडीज, साउथ कोरिया (2009–2013) में प्रोफेसर और डीन रहे हैं। आपका अध्यापन और शोध क्षेत्र पूर्वी एशिया, एशिया और एशिया के अंतर्संपर्कों में कोरिया का बौद्धिक और सांस्कृतिक इतिहास, और बौद्धवाद का इतिहास रहा है।

2014–15 में अकादमिक गतिविधियां

प्रकाशन

'हिस्टोरिकल टैक्स्ट ऑन अर्ली कोरिया एंड मॉडर्न हिस्ट्रीग्राफी' कोलोनाइजेशनः ए कंपेरेटिव स्टडी ऑफ कोरिया एंड इंडिया, संपादक वी. राघवन और आर. महालक्ष्मी, अकादमिक पब्लिशर्स, 2015

'कोरियन मॉन्क इन चाइना एंड बियॉन्ड ऑन द सिल्क रोड इन द 7 एंड 8 सेंचुरी', इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस में प्रस्तुत किया गया एक पेपर, सेंटर फॉर चाइनीज एंड साउथईस्ट एशियन स्टडीज, जेएनयू, 26–27 मार्च 2015

'बौद्धिस्ट किंगशिप इन अर्ली कोरिया' कोरियन इंडियन कल्चर, खंड 19 (दिसंबर 2014, जनवरी 2015 में प्रकाशित)

अन्य भूमिकाएं

मुख्य संपादक, जरनल कोरियन इंडियन कल्चर, खंड 19

निम्न जरनल के सदस्य, संपादक बोर्ड

क.) रिव्यु ऑफ कोरियन स्टडीज

ख.) इंटरनेशनल जरनल ऑफ बौद्धिस्ट थॉट एंड कल्चर

3. मुरारी झा, असिस्टेंट प्रोफेसर

मुरारी झा नीदरलैंड की लेडेन यूनिवर्सिटी (2006–2013) और नई दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (1999–2006) से प्रशिक्षित हैं। उन्होंने सिंगापुर की नेशनल यूनिवर्सिटी (2013–2014) में इतिहास विभाग में पोस्टडॉक्टोरल फैलो के तौर पर काम किया। वर्तमान में गंगा नदी पर शोध में उनका फोकस 1500–1800 ईसवीं के दौरान गंगा के समतल क्षेत्र (बिहार प्रांत) और उसके आसपास के क्षेत्रों की बदलती आर्थिक स्थिति पर है। उनकी रुचि मुगल साम्राज्य में, और पूर्व आधुनिक युग में कृषि और अर्थव्यवस्था के साथ, बंगाल की खाड़ी के तटीय और दक्षिण एशियाई व्यापारिक समुदाय की सामाजिक दुनिया, दक्षिण और दक्षिणपूर्व एशिया में यूरोपीय कंपनियों की गतिविधियां, और भारतीय महासागर नेटवर्क और दुनिया इतिहास में भी रही है।

2014–15 में अकादमिक गतिविधियां

प्रकाशन

जरनल निबंध, 'माइग्रेशन, सेटलमेंट एंड स्टेट फॉरमेशन इन द गंगा प्लेनः ए हिस्टोरिकल जियोग्राफिक पर्सपेक्टिव', जरनल ऑफ द इकोनॉमिक एंड सोशल हिस्ट्री ऑफ द ओरियंट 57:4 (नवंबर 2014) : 587–627

लोकप्रिय अखबार बिहार समाचार, में एक प्रसिद्ध लेख, 'गंगा नदी और बिहार की व्यापारिक सामग्रियों का विदेश व्यापारः पूर्व उपनिवेशवादी परिप्रेक्ष्य'। (मार्च 2015) : 50–52

अंतर्राष्ट्रीय पहचान

आईसीएएस बुक प्राइज 2015 में दर्ज निबंध http://www.icas.asia/longlists-icas-book-prize-2015-ibp-2015)

वर्ल्ड इकोनोमिक्स हिस्ट्री कॉन्ग्रेस (क्योटो 2015): नॉमिनेशन फॉर द बेस्ट प्राइज इन द अर्ली मॉडर्न पीरियड। इंटरनेशनल इकोनॉमिक हिस्ट्री एसोसिएशन'स न्यूजलैटर वेबपेजः http://www.ieha-wehc.org/newsletters.html)

अन्य

सरधाना में बेगम सामरू चर्च, सहारनपुर में कंपनी बाग और नजीब–उद–दौला द्वारा बनवाया गया पठारगढ़ किले (जिसे सुल्तान डाकू का किला नाम से भी जाना जाता है) का अध्ययन दौरा।

नालंदा विश्वविद्यालय, योगयकार्ता विश्वविद्यालय और लेडेन यूनिवर्सिटी के छात्रों के लिए जोस गोमंस के साथ इतिहास में एमए/पीएचडी का प्रोग्राम तैयार करना। डच एम्बेसी से डच भाषा के शिक्षक को नालंदा लाने में भी मदद करना।

4. सरमण मुखर्जी, असिस्टेंट प्रोफेसर

सरमन मुखर्जी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय और सेंटर फॉर स्टडीज सोशल साइंस, कलकत्ता से पीएचडी की। औपनिवेशिक इतिहासकार के तौर पर प्रशिक्षित श्री मुखर्जी का काम धरोहरों की राजनीति, स्मारकों, पुरातत्व के इतिहास और संग्रहालयों के इर्द–गिर्द घूमता है। उनका हालिया शोध धरोहर के अंतर्देशीय भूगोल और अंतएर्शियाई इतिहास के संवाद से संबंधित है। उनके अध्ययन में 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में बौद्ध के राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव का वर्णन है।

2014–15 में अकादमिक गतिविधि

शोध

परिवर्तन में प्रयोजनः दक्षिण और दक्षिणपूर्व एशिया में बुद्ध अवशेषों का मरणोपरांत जीवन

नवंबर 2014 से जनवरी 2015 – केआईटीएलवी के पोस्ट–डॉक्टोरल रिसर्च में आमंत्रित

सम्मेलन/सेमिनार प्रस्तुतिः

'बुद्ध अवशेषों का मरणोपरांत जीवन', 43वां वार्षिक सम्मेलन पैनल में पेपर प्रस्तुति, विस्कंसिन–मेडिसन, यूएसए, अक्टूबर 2014।

'एट द फ्रंटियर्स ऑफ अम्पायरः बुद्धिस्ट रेलिस इन द कॉलोनी', सम्मेलन में पेपर प्रस्तुति, केआईटीएलवी, लेडेन, 3 दिसंबर 2014।

'बोंस ऑन द मूवः डिप्लोमेसी, स्कोलरशिप, एंड रिचुअल लाइव्स ऑफ ट्रेवलिंग बुद्धिस्ट रेलिस फ्रॉम ब्रिटिश इंडिया टू सिआम' पेपर प्रस्तुति केआईटीएलवी, लेडेन, 15 जनवरी 2015।

'स्पेक्टर ऑन द फॉर्ज्डः आर्कियोलोजिस्ट, द बुद्धिस्ट पोप, एंड द बोन्स ऑफ द साक्य मुनि', प्रेजिडेंसी यूनिवर्सिटी हिस्टोरिकल एसोसिएशन, औपचारिक शुरुआती सम्मेलन, 20 मार्च 2015

प्रकाशन

सलोनी माथुर और कविता सिंह संपादित, नो टचिंग, नो स्पीटिंग, नो प्रेयिंगः द म्यूजियम इन साउथ एशिया में 'ए साइट म्यूजियम विदाउट ए साइटः द बोध गया आर्कियोलोजिकल म्यूजियम', नई दिल्ली, 2015

5. कशफ घनी, असिस्टेंट प्रोफेसर

कशफ घनी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से इतिहास में पीएचडी डिग्री ली। उनकी दिलचस्पी सूफी परंपरा में है। सूफीवाद के साथ दक्षिण एशिया के इस्लाम और पूर्व–आधुनिक भारत (1000–1800) में मुस्लिम समाज उनके पसंदीदा विषय है। वह एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता; यूनिवर्सिटी ऑफ सोरबोर्न–नॉविले, पैरिस और बर्लिन में शोध के पद पर भी रहे हैं।

2014–15 में अकादमिक गतिविधियां

फैलोशिप

मौलाना अबुल कलाम आजाद इंस्टीट्यूट ऑफ एशियन स्टडीज, कोलकाता में फैलो

इंटरनेशनल प्रोजेक्ट सहयोग

सहयोगी, परसो–इंडिका प्रोजेक्ट, इंस्तीत्युत द' एत्युद ईरानीनेस, यूनिवर्सिटे सोर्बोन नॉवेले – पैरिकस 3, यूएमआर 7528 'मोन्देस ईरानियन एत इंडियन', पैरिस।

अनुवादक, बंगाली, ऊर्दू और हिंदी में ईआरसी–निधिबद्ध शोध परियोजना 'म्यूजिकल ट्रांजिशन टू यूरोपियन कोलोनियलिज्म इन द ईस्टर्न इंडियन ओशियन, 1700–1900', संगीत विभाग, किंग्स कॉलेज, लंदन, 2012–2014

प्रकाशन

'इन सर्च फॉर प्योर इस्लामः मिस्टिकल ट्रेडिशन एंड वॉइस ऑफ डिसेंट फ्रॉम बंगाल', लॉयड रिजन संपादित सूफिज्म एंड सालफिज्म में, ब्लूम्सबरी, लंदन, 2015

वेयर नॉलेज मीट्स द सीकरः नालंदा विश्वविद्यालय, एसईपीएचआईएस ई–मैग्जीन, खंड 10, संख्या 1–2, 2014

चेयर/एक्सपर्ट/रिसोर्स पर्सन

सम्मेलन 'प्रेक्टिस, परफॉर्मेंस एंड पॉलिटिकल ऑफ सूफी शिरीन इन साउथ एशिया एंड बियॉन्ड', औरंगाबाद, 1–4 अगस्त 2014

6. सेम्युअल राइट, असिस्टेंट प्रोफेसर

सेम्युअल राइट ने अपनी पीएचडी शिकागो (2014) विश्वविद्यालय से पूरी की। उनकी शोध का विषय पूर्व आधुनिक भारत (15वीं से 18वीं सदी) में बौद्धिक इतिहास और भाषा विज्ञान, संस्कृत और बांग्ला के प्राचीन शिलालेखों के अध्ययन और पुरालेख विद्या, बंगाल के साहित्यिक कार्य से संबंधित है। उनका वर्तमान कार्य संस्कृत बुद्धिजीवियों के विचार–संसार और भारत की सोलहवीं व सतरहवीं शताब्दी में उनके सामाजिक–राजनीतिक संदर्भ के बीच संपर्क की तलाश करता है।

2014–15 में अकादमिक गतिविधियां

सम्मेलन

''स्पीकिंग पोलिटिकलीः संस्कृत स्कोलर्स एंड पोलिटीज इन अर्ली मॉडर्न बंगाल''। एशिया में भाषा, शक्ति और पहचानः सीमाओं को पार करती भाषा की सर्जना। इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर एशियन स्टडीज (आईआईएएस), लेडेन (नीदरलैंड्स), मार्च 14–16, 2016

7. यिन केर, एडजन्ट असिस्टेंट प्रोफेसर

यिन केर स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज में अनुबद्ध सहायक प्रोफेसर हैं। उन्होंने 2013 पेरिस से इतिहास में पीएचडी पूरी की। नालंदा विश्वविद्यालय में नियुक्ति से पहले वह नान्यांग यूनिवर्सिटी के एशियन आर्ट हिस्ट्री विभाग में असिस्टेंट ट्यूटर, मॉडर्न एंड कंटेम्परारी साउथईस्ट एशियन आर्ट हिस्ट्री में लेक्चरार, और सिंगापुर आर्ट म्यूजियम (नेशनल आर्ट गैलेरी, सिंगापुर) में असिस्टेंट क्यूरेटर रह चुकी हैं। उनकी प्रकाशित किताबों में 'ए शॉर्ट स्टोरी ऑफ बगयी ऑन्ग सो इन फाइव इमेजिस', 'इन फील्ड नोटिसः मेपिंग एशिया' (हॉन्ग कॉन्गः एशिया आर्ट आर्काइव, 2013), आर्ट फो, ओल आर्ट मॉडर्न बिरमेन सेलन लेस इलस्ट्रेशंस दे बगयी ऑन्ग सू, इन ला क्वेश्चन दे ला, आर्ट एन एसी ओरिनेट (पैरिसः प्रेसेस दे ल, यूनिवर्सिटी दे पैरिस–सोर्बोन, 2008) एंड मॉडर्न आर्ट एकोर्डिंग टूं बगयी ऑन्ग सू, इन जरनल ऑफ बर्मा स्टडीज (देकाल्बः नॉर्थ इलनॉइस यूनिवर्सिटी, 2005/06)। स्वतंत्र शोधकर्ता के रूप में उनके प्रोजेक्ट थे वीडियो, एन आर्ट, ए हिस्टरी 1965–2010, ए सिलेक्शन फ्रॉम द सेंटर पॉम्पीडो एंड सिंगापुर आर्ट म्यूजियम कलेक्शन (पेरिस, सिंगापुर), प्लेः आर्ट फ्रॉम म्यंमार टूडे (सिंगापुर), मॉन्टपेलाइर–चीनेः बिनासल ऑफ कंटेम्परारी चाइनीज आर्ट (मॉन्टपेलाइर) और फ्रॉम कैलोट टू ग्रूजः फ्रेंच ड्राइंग फ्रॉम वेमर (न्यूयॉर्क, पैरिस, वेमर)।

मुख्य अधिकारी और प्रशासनिक स्टाफ

उप–कुलाधिपतिः
डॉ. गोपा सभरवाल

डीन (अकादमिक योजना):
डॉ. अंजना शर्मा

वित्त अधिकारीः
श्री पद्माकर मिश्रा

प्रशासनिक निदेशकः
श्री वी.के. श्रीधर

यूनिवर्सिटी इंजीनियरः
कर्नल मनोज कुमार प्रसाद

प्रबंधक (दाखिला):
श्री सौरभ चौधरी

अकादमिक प्रोग्राम कोर्डिनेटरः
डॉ. बी अंबिका प्रसाद पाणि

राजगीर ऑफिस
राजगीर, जिला नालंदा, बिहार, भारत, पिन– 803116, फोनः +91–6112–255330, फैक्सः +91–6112–255766
बिहार, भारत

नई दिल्ली ऑफिस
दिल्ली ऑफिसः दूसरी मंजिल, काउंसिल फॉर सोशल डिपार्टमेंट, 53 लोधी एस्टेट, नई दिल्ली, भारत
पिन–110003, फोनः +91–11–24622330, फैक्सः +91–11–24618351
www.nalandauniv.edu.in